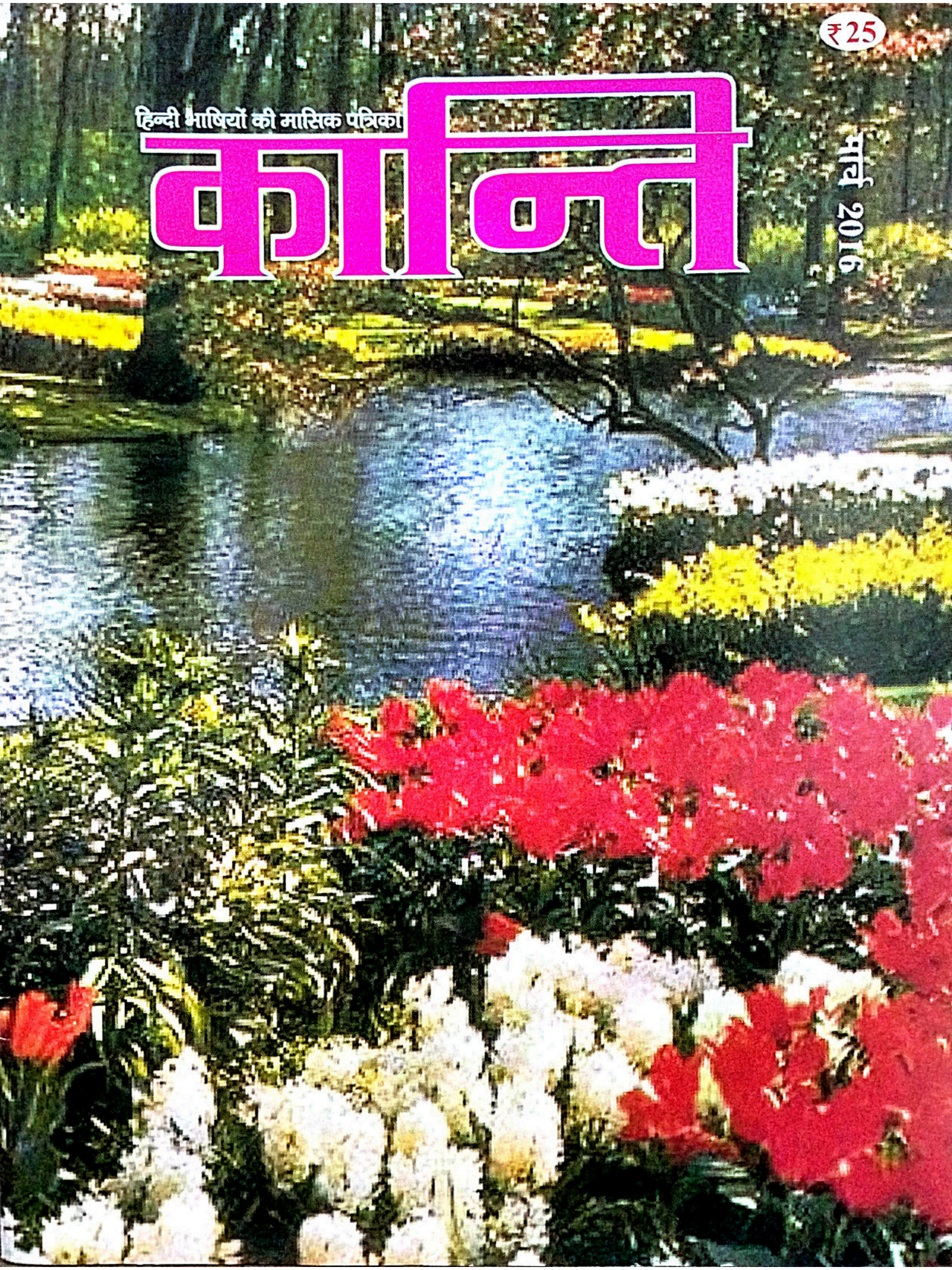
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कादम्बिनी
मार्च 2016

# HINDUSTAN
## Pavers & Blocks
Group

Established Since 1977


**Anwar Khan**
**+91 9822427700**
**Akbar Khan**
**+91 9822497700**





## HINDUSTAN INDUSTRIES

*Your Lifestyle Paving Company*

**Manufacturers Of Solid Concrete Blocks, Interlocking Pavers, Tiles & Allied Concrete Products**


**Colvale IDC, Colvale, Mapusa-Goa**
**Phone : 0832 2257700, 0832 2257900**
**Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com**


**www.hindustangroupgoa.com**

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 25 अंक 9 मार्च 2016

**उन लोगों की ओर तनिक भी न झुकना, जिन्होंने अत्याचार की नीति अपनायी है, अन्यथा आग तुम्हें आ लिपटेगी और अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र न होगा।**

**–क़ुरआन**

संपादक

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

# इन्सान को इन्सान बनाएं

अहबाब[1] से कह दो ज़रा दामन को बचाएं
मैं डूब रहा हूं मेरे नज़दीक न आएं

क्या अब भी मेरे दर्द का दरमां[2] नहीं होगा?
अल्लाह मेरे हाल पे रोती है दुआएं

मुमकिन नहीं दख़्ल उनकी मशीयत[3] में किसी का
मुख़्तार[4] हैं, मालिक हैं, बिगाड़ें कि बनाएं

आना ही था आ ही गया ये मरहला आख़िर
परवा न करें जान की, ईमान बचाएं

इस दौर के ईसा तो यही सोच रहे हैं
हर ज़ख़्म को किस तरह से नासूर बनाएं

ऐ चारागर[5] एजाज़[6] दिखा चारागरी का
जो रोते हुए आये हैं हंसते हुए जाएं

मुश्किल तो है यह काम, मगर काम यही है
इस दौर के इन्सान को इन्सान बनाएं

अच्छी है यही सोच 'हफ़ीज़' अपनी नज़र में
दुनिया से डरें और न दुनिया को डराएं।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. दोस्तों 2. इलाज 3. मर्ज़ी, इरादा 4. आज़ाद 5. डॉक्टर, इलाज करने वाला, चिकित्सक 6. चमत्कार



## कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| इन्सान को इन्सान बनाएं (कविता) | –हफ़ीज़ मेरठी | 3 |
| क़ुरआन ज्योति | | 5 |
| बाल बच्चों पर ख़र्च करना (हदीस मंजरी) | | 6 |
| भ्रष्टाचार पर क़ाबू की रणनीति (संपादकीय) | | 7 |
| सच्चे मुसलमान बनें (आपके पत्र) | | 9 |
| क़ैदियों के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सद्व्यवहार | –मुहम्मद ग़ज़ाली नदवी | 11 |
| हज़रत असमा बिन्त अबू बक्र (रज़ि०) (प्रेरणा) | –संपादन प्रभाग | 15 |
| न छीनो (कविता) | –ओम प्रकाश बजाज | 18 |
| विश्वास करें, मगर उसूलों से समझौता न करें (महिला जगत) | –के० कविता | 19 |
| सामाजिक अन्याय के प्रबल विरोधी थे अदम गोंडवी (साहित्यिकी) | –चन्द्रभूषण सिंह यादव | 23 |
| आतंकवाद–मिथक और यथार्थ (विशेष आयोजन) | –निहाल सग़ीर | 26-27 |
| ढर्रा (कविता) | –ओम प्रकाश बजाज | 30 |
| कैसे रुके हिरासत में यातना ? | –सुभाष गाताडे | 31 |
| हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन और शिक्षा पर दो पुस्तकें (पुस्तक समीक्षा) | –मुहम्मद इलियास हुसैन | 35 |
| सालोदिया इस्लाम की गोद में (शीतल छाया) | –फ़िरोज़ ख़ान | 37 |
| वार्तालाप (कहानी) | –अब्दुल बारी साक़ी | 39 |
| लिंग भेद (कविता) | –ओम प्रकाश बजाज | 40 |
| कैसे करें सकारात्मक व्यक्तित्व का निर्माण ? (कैरियर) | –घेवरचन्द श्रीश्रीमाल | 41 |
| मक्कार–मनजीत शर्मा 'मीरा', आशा बहिन–प्रभात दुबे (लघुकथाएं) | | 43 |
| आज़ादी (कविता) | –अहद प्रकाश | 44 |
| आरक्षण मुसलमानों का हक़ | –विद्या प्रकाश | 45 |
| सम्मान लौटाने की सोच रहा हूं (व्यंग्य) | –डॉ० राकेश कुमार सिंह | 47 |
| टी–20–कुछ ख़ास बातें (खेल–खिलाड़ी) | –ए० एन० शिब्ली | 48 |
| सिर्फ़ मशीन नहीं रोबोट (बालवीथी) | | 50 |




(102) कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपनी ग़लतियों को मान लिया है। उनका कर्म मिला-जुला है, कुछ भला है और कुछ बुरा। असंभव नहीं कि अल्लाह उन पर फिर मेहरबान हो जाए क्योंकि वह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है। (103) ऐ नबी ! तुम इनके मालों में से सदक़ा लेकर इन्हें पाक करो और (नेकी की राह में) इन्हें बढ़ाओ और इनके हक़ में रहमत की दुआ करो, क्योंकि तुम्हारी दुआ इनके लिए तसल्ली का कारण होगी, अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है। (104) क्या इन लोगों को मालूम नहीं है कि वह अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और इनकी ख़ैरात (सदक़े) को स्वीकृति प्रदान करता है, और यह कि अल्लाह बहुत क्षमाशील और दयावान है ? (105) और ऐ नबी ! इन लोगों से कह दो कि तुम कर्म करो, अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले सब देखेंगे कि तुम्हारी कर्मनीति अब क्या रहती है।[99]

–क़ुरआन, 9 : 102-105

---

99. यहां ईमान के झूठे दावेदारों और गुनाहगार मोमिनों (ईमान वालों) का अन्तर साफ़-साफ़ स्पष्ट कर दिया गया है। जो व्यक्ति ईमान का दावा करता है, मगर वास्तव में अल्लाह और उसके दीन और ईमान वालों की जमाअत के प्रति कोई निष्ठा नहीं रखता, उसके अनिष्ठावान होने का प्रमाण अगर उसकी रीति-नीति से मिल जाए तो उसके साथ कठोरता का व्यवहार किया जाएगा, अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए वह कोई माल दे तो उसे रद्द कर दिया जाएगा। मर जाए तो न मुसलमान उसके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ेंगे और न कोई ईमान वाला उसके लिए मग़फ़िरत (मुक्ति) की दुआ करेगा, चाहे वह उसका बाप या भाई ही क्यों न हो। इसके विपरीत जो व्यक्ति ईमान वाला हो और उससे कोई अनिष्ठापूर्ण कार्य हो जाए, वह अगर अपने क़ुसूर को मान ले तो उसको क्षमा भी किया जाएगा, उसके सदक़े भी क़ुबूल किए जाएंगे और उसके लिए रहमत की दुआ भी की जाएगी। अब रही यह बात कि किस व्यक्ति को अनिष्ठापूर्ण नीति अपनाने के बावजूद मुनाफ़िक़ के स्थान पर केवल गुनाहगार मोमिन (ईमान वाला) समझा जाएगा, तो यह तीन कसौटियों से परखी जाएगी जिनकी ओर इन आयतों में संकेत किया गया है :

1. वह अपनी ग़लती का कोई अनुचित कारण और वजह पेश करने के बजाय सीधी तरह साफ़-साफ़ मान लेगा,
2. उसकी पिछली कर्म नीति पर दृष्टि डालकर देखा जाएगा कि यह निष्ठा का आदी मुजरिम तो नहीं है। अगर उसका व्यवहार और कर्म-नीति पहले ख़ैर और भलाइयों की रही है तो मान लिया जाएगा कि यह केवल एक कमज़ोरी है जो क्षणिक रूप से सामने आ गयी।
3. उसके आगे की कर्म-नीति पर नज़र रखी जाएगी कि क्या उसका अपनी ग़लती स्वीकार कर लेना मात्र मौखिक है या वास्तव में उसके भीतर पछतावे का कोई गहरा एहसास मौजूद है। अगर वह अपने क़ुसूर की क्षति-पूर्ति के लिए बेचैन नज़र आए तो समझा जाएगा कि वह वास्तव में लज्जित है और यह लज्जा ही उसके ईमान और निष्ठा का प्रमाण होगी।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

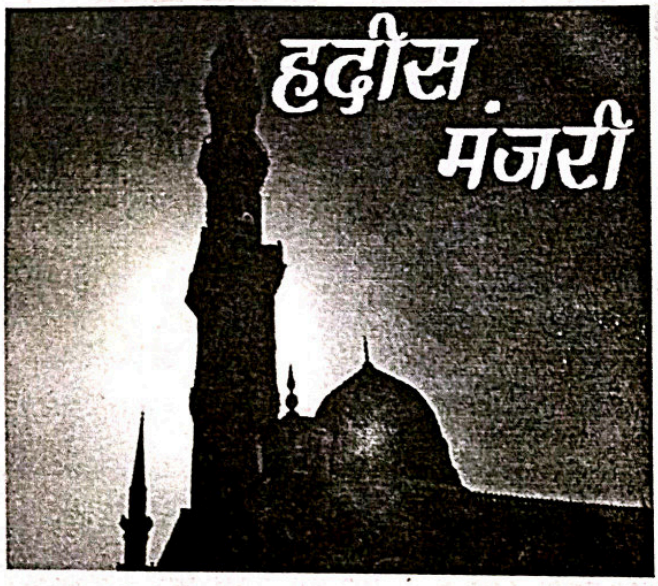


# बाल-बच्चों पर ख़र्च करना

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "एक दीनार वह है जो तुमने अल्लाह की राह में ख़र्च किया, एक दीनार वह है जो तुमने गुलाम आज़ाद करने पर ख़र्च किया और एक दीनार वह है जो तुमने किसी मोहताज पर ख़र्च किया और एक दीनार वह है जो तुमने अपने बाल-बच्चों पर ख़र्च किया । इनमें सबसे अधिक बदला अल्लाह के यहां उस दीनार पर मिलेगा जो तुमने अपने बाल-बच्चों पर ख़र्च किया ।"

–मुस्लिम

● हज़रत अबू अब्दुल्लाह जिन्हें अबू अब्दुर्रहमान सौबान बिन बुजदूद (रज़ि॰) भी कहते हैं और जो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के आज़ाद किये हुए गुलाम हैं–से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "सबसे उत्तम दीनार वह है जिस दीनार को आदमी बाल-बच्चों पर ख़र्च करता है और वह दीनार जिसे वह अल्लाह के मार्ग में अपनी सवारी पर ख़र्च करता है और वह दीनार जिसको वह अल्लाह के मार्ग में अपने साथियों पर ख़र्च करता है ।"

–मुस्लिम

● हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि॰) अपनी लम्बी हदीस में रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनसे कहा : "तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी ख़र्च करोगे अवश्य ही तुम्हें उसका बदला मिलेगा यहां तक कि जो कौर तुम अपनी स्त्री के मुंह में डालते हो उस पर भी ।"

बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत मसऊद अल-बदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जब आदमी अपने बाल-बच्चों पर अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ख़र्च करता है तो यह उसके हक़ में सदक़ा (दान) है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "कोई दिन भी ऐसा नहीं है जिसमें बन्दे सोकर उठते हों और दो फ़रिश्ते न उतरें । उनमें से एक कहता है कि ऐ अल्लाह, ख़र्च करने वाले को और दे और दूसरा कहता है कि ऐ अल्लाह, रोक कर रखने वाले का माल विनष्ट कर दे ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "ऊपर वाला (देने वाला) हाथ नीचे वाले (लेने वाले) हाथ से अधिक अच्छा है । और आरंभ अपने बाल-बच्चों से करो और सबसे अच्छा सदक़ा वह है जो अपने बाल-बच्चों की ज़रूरतों से फ़ालतू माल से किया जाए । और जो व्यक्ति हाथ फैलाने से बचना चाहता है अल्लाह उसे बचा लेता है । और जो व्यक्ति आत्मनिर्भर होना चाहता है अल्लाह उसे आत्मनिर्भर कर देता है ।"

–बुख़ारी

('रियाजुस्सालिहीन' से)

**इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें**

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

# भ्रष्टाचार पर क़ाबू की रणनीति

हमारे देश में भ्रष्टाचार की घटनाएं बार-बार सामने आ रही हैं। अब एक सर्वे में यह तथ्य उजागर हुआ है कि मोदी सरकार के दौरान भी भ्रष्टाचार कम नहीं हुआ है, जबकि भ्रष्टाचार से परेशान जनता ने सुशासन की चाह में सत्ता-परिवर्तन किया था। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के करप्शन परसेप्शन इंडेक्स (सी॰पी॰आई॰) की ताज़ा रिपोर्ट में है कि सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार का वही हाल है, जो एक साल पहले था। जनता की भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ लगातार लड़ाई के बावजूद उक्त संगठन के सर्वेक्षण में देश को महज़ 38 अंक मिले हैं। पिछले वर्ष भी भारत के इतने ही अंक थे। 168 देशों की सूची में भारत का स्थान 76वां है। यह इंडेक्स 168 देशों में सरकारी क्षेत्र की कंपनियों में भ्रष्टाचार की स्थिति पर आधारित है। इंडेक्स में जितने अधिक नंबर होते हैं, भ्रष्टाचार उतना ही कम होता है। इस हिसाब से भारत की स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। वहीं पिछले साल रैंकिंग में 174 देश शामिल थे और उनमें भारत 85वें नम्बर पर था। ऐसे में इस बार देशों की संख्या कम होने से रैंकिंग भी कम हुई है। पड़ोसी देशों की बात करें तो भूटान के हालात सबसे बेहतर हैं। 65 अंकों के साथ यह देश 27वें नंबर पर हैं। भारत के सभी पड़ोसी सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार की समस्या से बुरी तरह जूझ रहे हैं। इस रैंकिंग में चीन 83 तो बंगलादेश 139वें पायदान पर है। पाकिस्तान, श्रीलंका और नेपाल के अंकों में मामूली इज़ाफ़ा हुआ है। वहीं दुनिया में डेनमार्क सबसे कम भ्रष्ट देश है। उसे 91 प्वाइंट्स के साथ लगातार दूसरे साल यह तमग़ा मिला है। दूसरे नम्बर पर स्थित फिनलैंड के 90 और स्वीडन के 89 नम्बर हैं। उत्तर कोरिया और सोमालिया सूची में सबसे नीचे हैं। दोनों देशों का स्कोर आठ है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के एशिया पैसेफ़िक क्षेत्र के डायरेक्टर श्रीरक प्लीपट के मुताबिक़, भारत में भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए किये वादों को तोड़ने के मामले बहुत अधिक हैं। ऐसे मामले मई 2014 में हुए आम चुनाव से फ़रवरी 2015 दिल्ली विधानसभा के बीच ज़्यादा देखे गये हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष जारी सी॰पी॰आई॰ इंडेक्स से जनता और नेताओं को कड़ा संदेश मिलेगा। जनता अब सरकार से भ्रष्टाचार के ऊपर सवाल पूछ सकेगी और चुनावी वादों को निभाने के लिए दबाव बना सकेगी। साथ ही उन्होंने वर्तमान मोदी सरकार के कामकाज पर कहा कि यह सरकार वादा करने में सबसे आगे है और निभाने में सबसे पीछे।

सभी जानते हैं कि केन्द्रीय सत्ता में आने से पहले से ही भ्रष्टाचार और काले धन को जिस तरह नरेंद्र मोदी ने अपना बड़ा मुद्दा बनाया था, उससे इस सोच को बल मिला था कि नयी सरकार भ्रष्टाचार

और भ्रष्ट लोगों के ख़िलाफ़ सख़्त क़दम उठाएगी, लेकिन लगभग डेढ़ वर्ष से अधिक गुज़र जाने के बाद भी अमलन कुछ ख़ास नहीं हो सका । यह बात अलग है कि सरकार बनते ही प्रधानमंत्री मोदी ने न्यायालयों में भ्रष्ट नेताओं पर चल रहे मामलों की फास्ट ट्रैक सुनवाई करने की अपील की, मगर अभी तक कुछ हो न सका ! दूसरी ओर इस पर भी ग़ौर किया जाना चाहिए कि वर्तमान कैबिनेट में तमाम आपराधिक मामलों में आरोपित लोगों की तादाद पुरानी कांग्रेस सरकार के दाग़ी मंत्रियों से क़रीब दोगुनी है । 66 सदस्यीय वर्तमान कैबिनेट के क़रीब एक तिहाई मंत्री आपराधिक धमकी, धोखाधड़ी, तो कुछ दंगा भड़काने और बलात्कार जैसे गंभीर आरोपों में घिरे हैं । लोकपाल भी अभी तक हवा में है । 'आप' के लोकपाल को भी मोदी सरकार ने रोककर क़ानूनी दांव-पेंच के हवाले कर दिया है और केजरीवाल सरकार को निबटाने पर पूरा ज़ोर लगा रखा है । भ्रष्टाचार विरोधी क़ानून में उचित संशोधन करने के साथ ही लोकपाल जैसी व्यवस्था को लागू करने से भ्रष्टाचार पर रोकथाम में काफ़ी मदद मिल सकती है । आर्थिक विकास से ही भ्रष्टाचार उन्मूलन-संभव नहीं । फिर देश का अपेक्षित आर्थिक विकास भी तो नहीं हो पा रहा ! 1983 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भ्रष्टाचार को वैश्विक चलन कहा था । इस वक्तव्य के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रधानमंत्री के ऐसी बात करने पर खेद जताया था । 1989 के लोकसभा चुनाव में भ्रष्टाचार का मुद्दा छाया रहा । तब से लेकर आज तक चुनावी अभियानों में भ्रष्टाचार मिटाने के दावे बढ़-चढ़कर उछाले जाना आम बात हो गयी है । ऐसे में इन दावों की कलई तब खुलती है, जब भारत सूची में बुर्किना फासो, जमैका, पेरु और जाम्बिया जैसे ग़रीब देशों के पायदान जैसा पाया जाता है । वस्तुस्थिति यह है कि आज हमारा देश भ्रष्टाचार और नैतिक पतन से गंभीर रूप से जूझ रहा है । भ्रष्टाचार पूरी व्यवस्था को तबाह और बर्बाद कर रहा है । जब तक इन्सान के नैतिक अस्तित्व को सबल नहीं बनाया जाएगा और उसके अंदर ईशपरायणता एवं ईशभय नहीं पैदा होगा, तब तक भ्रष्टाचार-उन्मूलन असंभव है । पूरी सृष्टि में केवल इन्सान ही ऐसा प्राणी है, जिसे कर्म और इरादे का अधिकार प्राप्त है । वह ईश्वर द्वारा स्रष्ट सभी जीवों और चीजों में सर्वश्रेष्ठ है, अत: सृष्टि की बहुत-सी चीज़ें उसके वशीभूत की गयी हैं, जिनका वह अधिकारपूर्वक उपभोग करता है और कर सकता है । यहां यह तथ्य भी स्पष्ट रहे कि इन्सान के न तो अधिकार असीमित हैं और न ही उपभोग । उसके लिए भी एक सीमा-रेखा है, जिसे मर्यादा कहते हैं । यह चीज़ ही इन्सान को नैतिक अस्तित्व प्रदान करती है । मर्यादा और नैतिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए ही सदाचरण के द्वारा इन्हें परिमार्जित करने एवं जीवन को उच्चता की ओर ले जाने के लिए इन्सान को आध्यात्मिकता की ज़रूरत होती है, जो उसके जीवन की नैसर्गिक, बुनियादी और अपरिहार्य आवश्यकता है । अत: भ्रष्टाचार- निवारण के लिए अनिवार्य है कि इन्सान अपने स्रष्टा-पालनहार की ओर पलटे और उसका आज्ञाकारी और ईशपरायण बने ।

# सच्चे मुसलमान बनें

आज हम देख रहे हैं कि पूरी दुनिया के मुसलमान परेशानहाल हैं । कई मुस्लिम देशों में त्राहि-त्राहि मची हुई है । आज हम मुसलमानों के सामने जो हालात पेश आ रहे हैं, उसमें हमारी स्वयं की ग़लतियां हैं । हमारी सबसे बड़ी परेशानी यह है कि हम सिर्फ़ इस कारण मुसलमान हैं, क्योंकि हम मुसलमान के घर पैदा हो गये । अमल से हम लोग मुसलमान नहीं रहे ।

आज पूरी दुनिया जो हम पर टूट पड़ी है, उसका कारण हमारी बदआमालियां हैं । हमारे बुज़ुर्गानेदीन ने दीन-ए-इस्लाम के लिएउ जो मेहनत की थीं, जो क़ुरबानियां दी थीं, उन्हें हम भूल गये हैं । हमें अपने दीन की क़द्र नहीं है, क्योंकि हमें बिना क़ुरबानी दिये दीन मिल गया, जबकि हमारे बुज़ुर्गानेदीन को न जाने कितने कष्ट उठाने पड़े, इस दीन की ख़ातिर ।

हम अल्लाह के नाफ़रमान बन्दे बने हुए हैं, इसीलिए हम अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हो रहे हैं । हमारे बुज़ुर्गानेदीन ने दीन-ए-इस्लाम के लिए अपने घर-बार छोड़ दिये और अल्लाह की राह में निकल पड़े, उन्होंने अपने दीन पर ज़बरदस्त मेहनत की तथा नतीजे में अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और यह सच्चा दीन पूरी दुनिया में फैल गया ।

दुनिया और आख़िरत की कामयाबी दीन-ए-इस्लाम में ही है, लेकिन आज हम मुसलमान सिर्फ़ दुनिया के लिए मेहनत कर रहे हैं तथा आख़िरत की हमें परवाह नहीं । जबकि होना तो यह चाहिए कि अपनी आख़िरत को संवारने के लिए हम अपने दीन पर मेहनत करें । आज मुस्लिम देशों में जो फ़साद फैला हुआ है, उसका कारण है-अल्लाह की नाफ़रमानी । अल्लाह की ओर से हमें दंड दिया जा रहा है ।

एक तो हम अल्लाह की नाफ़रमानी कर रहे हैं, दूसरी बात यह कि आज जो हालात हैं, उसके लिए हम अल्लाह ही को दोषी ठहरा रहे हैं यानी हम दोहरा गुनाह कर रहे हैं ।

यदि हम अल्लाह की फ़रमांबरदारी करें, तो अल्लाह को क्या पड़ी है, अपने प्रिय बन्दों को दंड देने की । अल्लाह कभी ईमान वालों के साथ बुरा नहीं करता, अलबत्ता उन्हें आज़माइश में ज़रूर डालता है । विषम हालातों के लिए अल्लाह को कोसना कमज़ोर ईमान की निशानी है ।

हमारा तवक्कुल अल्लाह पर न होकर बन्दों पर है कि फ़्लां को ख़ुश कर लंगा तो मेरा काम बन जाएगा । इसके अलावा हम तावीज़-गंडों के ही चक्कर में पड़े हुए हैं ।

हम ऊपरी तौर पर तो कहते हैं-अल्लाह करीम है, वह जो करेगा अच्छा करेगा । मगर हमारे दिल में वही बैठा हुआ है कि मैंने तो यह तावीज़ पहन रखा है, मुझे कैसे कोई हानि होगी ।

जो करने का काम है, वह कोई नहीं कर रहा, वह काम यह है कि सर्वप्रथम तो हमें अपनी बदआमालियों से बाज़ आना होगा तथा अल्लाह से सच्ची तौबा करनी होगी कि मैं अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हूं तथा आज के बाद कभी मुझ से यह गुनाह गुनाहों पर शर्मिन्दा हूं तथा आज के बाद कभी मुझ से यह गुनाह नहीं होंगे ।

यदि सारे मुसलमान सच्चे दिल से अल्लाह से तौबा करें और यह दुआ करें कि आज हमारे सामने जो विषम परिस्थितियां हैं, वे दूर हो जाएं, तो किसी न किसी की दुआ क़बूल होगी ही ।

यह दुनिया की ज़िन्दगी छोटी-सी ज़िन्दगी है, आख़िरत की ज़िन्दगी शाश्वत है । यह दुनिया हमारे लिए कर्म स्थली है तथा आख़िरत परिणाम स्थली है । अत: हमें इस दुनिया में दीन पर मेहनत करनी होगी ताकि हमारी आख़िरत न बिगड़े ।

आज दुनिया हमारी दुश्मन इसलिए बनी हुई है कि उन्हें नहीं पता कि दीन-ए-इस्लाम क्या है ? उन्हें यह कौन बताएगा ? ज़ाहिर-सी बात है एक सच्चा मुसलमान ही बताएगा ।

अल्लाह की बारगाह में सच्ची तौबा करने के बाद हमें सर्वप्रथम तो अपना दीन सीखना होगा, फिर उस पर चलकर दिखाना होगा, फिर जो ग़ैर-मुस्लिम हैं, उन तक दीन की दावत पहुंचानी होगी । हमें उन्हें यह बताना होगा कि दीन-ए-इस्लाम कितना प्यारा दीन है तथा अमन-चैन का

दीन है ।

जब लोग जान जाएंगे कि दीन-ए-इस्लाम क्या है, तो वे स्वयं इस दीन में दाख़िल हो जाएंगे और शत्रुओं की संख्या में अपने आप कमी आती चली जाएगी ।

हमारे बुज़ुर्गाने-दीन ने दीन पर चलकर एक नमूना पेश किया, जिसकी वजह से अनेक लोगों ने इस्लाम को अपनाया । अब हमें भी नमूना पेश करना होगा ताकि हमारा दीन इस दुनिया में फैल जाए और जो लोग इस दीन के दुश्मन हैं वे अपनी दुश्मनी छोड़कर इस दीन में दाख़िल हो जाएं ।

पहले के ज़माने में लोगों को इस्लाम के बारे में जानने के लिए लाइब्रेरी का रुख़ नहीं करना पड़ता था, बल्कि हमारे बुज़ुर्गाने-दीन के आमाल ही ऐसे थे, जिन्हें देखकर लोग ईमान ले आते थे । हमें भी वैसा ही बनना पड़ेगा ।

आज हमारा दीन किताबों में सिमट गया है तथा किताबें पढ़कर लोग ईमान लाने की सोचते भी हैं, तो मुसलमानों की हरकतें देखकर वापस पीछे हट जाते हैं ।

हमारा पूरा दीन है–अल्लाह की किताब और अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का तरीक़ा ।

हमें चाहिए कि हम अल्लाह की किताब को मज़बूती से थाम लें और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के तरीक़े को अपनाएं, अर्थात हम क़ुरआन पर तथा नबी (सल्ल०) की सुन्नतों पर चलकर दिखाएं । यानी हम अल्लह के आदेशों को मानें और नबी (सल्ल०) के तरीक़े पर चलें और दुनिया को यह दिखा दें कि एक सच्चा मुसलमान कैसा होता है ।

**अबरार अहमद** (लाखेरी वाले)
कोटा, राजस्थान

## लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

**-संपादक**

## क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

हदीस विशेषज्ञों ने इन आयतों के उतरने का कारण बताते हुए जिस घटना का उल्लेख किया है उससे यह विषय खुलकर सामने आ जाता है । वे कहते हैं कि ये आयतें अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर (रज़ि०) और उनके छह साथियों के मामले में उतरी थीं । अबू लुबाबा (रज़ि०) उन लोगों में से थे जो बैअते अक़्बा के अवसर पर हिजरत से पहले इस्लाम लाए थे, फिर बद्र, उहुद की लड़ाई और दूसरे युद्धों में बराबर सम्मिलित रहे, पर तबूक की लड़ाई के अवसर पर 'नफ़्स' की कमज़ोरी ग़ालिब आ गयी और ये किसी शरई कमज़ोरी के बिना बैठे रह गये । ऐसे ही निष्ठावान उनके दूसरे साथी भी थे और वे भी इसी कमज़ोरी के शिकार हो गये । जब नबी (सल्ल०) तबूक की लड़ाई से वापस तशरीफ़ लाए और उन लोगों को मालूम हुआ कि पीछे रह जाने वालों के बारे में अल्लाह और रसूल की क्या राय है तो वे अति लज्जित हुए । इससे पहले कि कोई पूछ-गछ होती, उन्होंने स्वयं ही अपने आपको एक खम्बे से बांध लिया और कहा कि हम पर सोना-खाना हराम है, जब तक हम क्षमा न कर दिये जाएं या फिर हम मर जाएं । चुनांचे कई दिन वे इसी तरह बिना खाए-पिए और बिना सोए बंधे रहे, यहां तक कि बेहोश होकर गिर पड़े । अंततः जब उन्हें बताया गया कि अल्लाह और रसूल (सल्ल०) ने तुम्हें क्षमा कर दिया तो उन्होंने नबी (सल्ल०) से निवेदन किया कि हमारी तौबा में यह भी शामिल है कि जिस घर के आराम ने हमें कर्तव्य से असावधान कर दिया, उसे और अपने तमाम माल को अल्लाह की राह में दे दें । मगर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सारा माल देने की आवश्यकता नहीं, केवल एक तिहाई काफ़ी है । अतः वह उन्होंने उसी समय अल्लाह की राह में दे दिया । इस क़िस्से पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह के यहां क्षमा किस प्रकार की कमज़ोरियों के लिए है । ये सब लोग अभ्यस्त अनिष्ठावान न थे, बल्कि इनके जीवन का पिछला कारनामा इनकी ईमानी निष्ठा का प्रमाण था । इनमें से किसी ने बहाने नहीं बनाए, बल्कि अपने क़ुसूर को स्वयं ही क़ुसूर मान लिया । उन्होंने क़ुसूर मानने के साथ अपने रवैये से सिद्ध कर दिया कि वे सच में अति लज्जित और अपने उस गुनाह की क्षतिपूर्ति के लिए बड़े बेचैन हैं ।

# क़ैदियों के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सद्व्यवहार

■ मुहम्मद ग़ज़ाली नदवी

दुनिया में कोई ऐसा धर्म नहीं है, जो आतंकवाद, लूट-मार, हत्या, चोरी-डकैती का आदेश देता हो। हर धर्म इन चीज़ों से रोकता है और इनका विरोधी है, लेकिन इस्लाम की बुनियादी विशेषता यह है कि वह ऐसा क़ानन-सिद्धांत और जीवन व्यवस्था देता है, जिससे सारी बुराइयों का निवारण हो सके और जिनसे अमली तौर पर समाज में पायी जाने वाली सारी बुराइयों पर नकेल कसी जा सके। इस्लाम में केवल आदेश देने को ही पर्याप्त नहीं माना गया है, बल्कि इसने अनगिनत ऐसे अमली क़दम उठाये हैं, जिन्हें अपनाया जाए तो समाज पूर्ण रूप से अपराधों से पाक हो जाए। यहां पर इस तरह के कुछ अमली नमूने पेश किये जा रहे हैं–

आमतौर पर क़ैदियों के साथ जो व्यवहार किया जाता है वह बहुत ही अत्याचारपूर्ण, अमानुषिक और घृणित होता है। अगर क़ैदी इसी देश का नागरिक है, तो भी यही मामला होता है और अगर ख़ुदा न करे वह किसी दूसरे देश का है, तो फिर तो अत्याचार की कोई सीमा नहीं होती, इसका परिणाम यह होता है कि वह क़ैदी इन्सानियत से ही नफ़रत करने लगता है।

मनोविज्ञान का एक सर्वमान्य सिद्धांत है कि "इन्सान समाज के हर व्यक्ति के साथ नफ़रत करने लगता है, जिस इन्सान के हिस्से में समाज से केवल नफ़रत और नफ़रत आमेज़ व्यवहार आया, वह भी समाज के हर व्यक्ति के साथ नफ़रत करने लगता है और जब क़ैद से निकलता है तो वह इन्सानियत का बाग़ी, एक निर्भीक अपराधी और नैतिक मूल्यों का दुश्मन बन चुका होता है।

**मनोविज्ञान का एक सर्वमान्य सिद्धांत है कि "इन्सान समाज के हर व्यक्ति के साथ नफ़रत करने लगता है, जिस इन्सान के हिस्से में समाज से केवल नफ़रत और नफ़रत आमेज़ व्यवहार आया, वह भी समाज के हर व्यक्ति के साथ नफ़रत करने लगता है और जब क़ैद से निकलता है तो वह इन्सानियत का बाग़ी, एक निर्भीक अपराधी और नैतिक मूल्यों का दुश्मन बन चुका होता है।**

युद्धबंदियों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं से इतिहास भरा हुआ है। जंगे अर्वाह की घटना प्रसिद्ध है कि बनी शीबान के जितने क़ैदी मुंज़िर बिन क़ैस के हाथ आये, उन सबको उसने पहाड़ की चोटी पर बैठा कर क़त्ल करना शुरू किया और कहा कि जब तक इनका ख़ून बहकर पहाड़ी की जड़ तक न पहुंच जाएगा, क़त्ल का सिलसिला बन्द न करूंगा। आख़िर जब वधितों की संख्या सैकड़ों से बढ़कर बहुत ज़्यादा हो गयी तो विवश होकर उसने मन्नत पूरी करने के लिए ख़ून पर पानी डलवा दिया और वह बहकर पहाड़ की जड़ तक पहुंच गया।

(इब्नुल असीर, जिल्द एक : 409)

रोम और ईरान के शासकों के बारे में इतिहास की गवाहियां मौजद हैं कि वे क़ैदियों के शरीर पर तेल डालकर उनके शरीर में आग लगा देते थे और उसकी रोशनी में खाना खाते थे। अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा अल-सहमी जब रोम वालों के हाथ में दूसरे कुछ मुसलमानों के साथ क़ैद हो गये तो उन्हें भयभीत करने के लिए हिरक्ल ने दो मुसलमानों को खौलते पानी में डाल दिया, यहां तक कि उनका चमड़ा उनके शरीर से अलग हो गया।

ईसाइयों ने मुस्लिम क़ैदियों के साथ सलीबी जंगों में जो अत्याचार किया, उसके संबंध में अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी लिखते हैं–"सलीबी जंगों में यरोपियन सल्तनतें जब मुसलमानों को लड़ाइयों में गिरफ़्तार करती थी, तो उनसे जानवरों की तरह काम लेती थीं, अल्लामा इब्ने जुबैर जब सलीबी जंगों के ज़माने में मैसिसली से गुज़रे हैं तो यह हालत देखकर तड़प उठे, अत: वे लिखते हैं–और सारांश उन दर्दनाक हालात के, जो उन शहरों में नज़र आते हैं, वे इस्लामी क़ैदी हैं, जो बेड़िया पहने नज़र आये हैं और जिनसे कठिन परिश्रम वाला काम लिया जाता है और इस तरह मुस्लिम औरतें पिंडलियों में लोहे के कड़े पहने सख़्त मेहनत से काम करती हैं, जिसको देखकर दिल फटा जाता है ।

(सीरते नबवी, शीर्षक जंगी इस्लाहात, जिल्द छठा)

टीटूस ने एक बार पचास हज़ार हिंसक जानवरों को पकड़वाया और कई हज़ार यहूदी क़ैदियों के साथ एक ही समय में एक अहाते में छुड़वा दिया, ट्राजान के खेलों में 11000 हिंसक जानवर और 10,000 आदमी एक ही समय में लड़ाये जाते थे । क्लाडेविस ने एक बार जंगी खेल में 19 हज़ार आदमियों को तलवारें देकर दूसरे से लड़ा दिया । क़ैसर आगस्टिस ने अपनी वसीयत के साथ जो तहरीर संलग्न की थी, उसमें लिखता है कि मैंने आठ हज़ार तलवारबाज़ों और 3510, जानवरों के खेल देखे हैं, यह सारा मनोरंजन युद्ध क़ैदियों के दम-क़दम से हो रहा था ।

(अल-जिहाद फ़िल इस्लाम,
शीर्षक असीराने जंग की हालत)

साधारण क़ैदी तो एक तरफ़, खुद क़ैसरे रूम वालीरियान जब शापूर प्रथम के हाथ क़ैद हुआ तो उसे ज़ंजीरों से बांध कर शहर में घुमाया गया । उम्र भर उससे गुलामों की तरह सेवा ली गयी और मरने के बाद उसकी खाल खिंचवा कर उसमें भूसा भर दिया गया । शापर जुल अक्ताफ़ की घटना प्रसिद्ध है कि बहरैन और अलहिसाअ के अरब युद्ध बंदियों से बदला लेने के लिए उसने आदेश दिया था कि उनके कंधों में सुराख़ करके उनके अन्दर रस्सियां डाली जाएं और सबको मिलाकर बांध दिया जाए ।

(जिहाद फ़िल इस्लाम,
शीर्षक 'युद्धबंदियों की हालत')

आज काल्पनिक आतंकवाद को ख़त्म करने के लिए तथाकथित कोशिशें जो लोग कर रहे हैं, उन्होंने अफ़ग़ानी और इराक़ी क़ैदियों के साथ अबू-ग़रीब की जेल और ग्वानतानामो की जेल में जो व्यवहार किया वह किस तरह से मानवीय है ? और क्या ऐसा व्यवहार करने के बाद उन क़ौमों के तथाकथित कोशिशों का भांडा फूट नहीं जाता ? क्या ऐसा व्यवहार सभ्य इन्सानों को जन्म दिया है या देश व क़ौम और इन्सानियत को बाग़ियों को ?

**हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने युद्धबंदियों के सिलसिले में ताकीद की कि उनको किसी तरह की तकलीफ़ न पहुंचने पाये । बद्र के युद्धबंदियों को जब आप (सल्ल०) ने सहाबा (रज़ि०) के हवाले किया, तो ताकीद की कि इनको खाने-पीने की तकलीफ़ न होने पाये । अत: सहाबा (रज़ि०) ख़ुद खजूर आदि खाकर बसर करते थे और क़ैदियों को खाना खिलाते थे ।**

क़ैदियों के साथ सद्व्यवहार का इस्लामी आदेश इसके बारे में सैयद सुलैमान नदवी (रह०) लिखते हैं–हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने युद्धबंदियों के सिलसिले में ताकीद की कि उनको किसी तरह की तकलीफ़ न पहुंचने पाये । बद्र के युद्धबंदियों को जब आप (सल्ल०) ने सहाबा (रज़ि०) के हवाले किया, तो ताकीद की कि इनको खाने-पीने की तकलीफ़ न होने पाये । अत: सहाबा (रज़ि०) ख़ुद खजूर आदि खाकर बसर करते थे और क़ैदियों को खाना खिलाते थे । हुनैन की जंग में 6000 क़ैदी थे सब छोड़ दिये गये और आप (सल्ल०) ने उनके पहनने के लिए 6000 जोड़े (मिस्र के कपड़े के) उनको दिये, अत: इब्ने सअद ने इस घटना की व्याख्या की है–

हातिम ताई की बेटी जब गिरफ़्तार होकर आयी तो आप (सल्ल०) ने मान-सम्मान के साथ उसको मस्जिद के एक गोशे में ठहराया और फ़रमाया कि कोई तुम्हारे शहर का आ जाए तो मैं उसके साथ तुमको विदा कर दूंगा । अत: कुछ दिन के बाद आप (सल्ल०) ने सफ़र का सामान देकर उसको एक व्यक्ति के साथ यमन भिजवा दिया । क़ुरआन मजीद में जहां ख़ुदा ने ख़ास बन्दों के गुणों का वर्णन किया

है, वहीं फ़रमाया है–

"और ये लोग अल्लाह के प्रेम में मुहताज और अनाथ और क़ैदी को खाना खिलाते हैं।" (कुरआन, 76:8)

(सीरतुलनबी, सैयद सुलैमान नदवी, जिल्द प्रथम, शीर्षक जंगी इस्लाहात)

मुसैलमा कज़्ज़ाब का क़बीला बनी हुनैफ़ा अंतिम समय तक बाग़ी रहा। सुमामा बिन उसाल उसके सरदारों में था। संयोगवश मुसलमानों के हाथ आ गया और उसको पकड़कर आप (सल्ल०) के पास ले आये। आपने उसको मस्जिदे नबवी में बांधने का आदेश दिया। जब आप (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ ले आये, तो सुमामा से पूछा, अब क्या कहते हो ? उन्होंने कहा मुहम्मद अगर तुम मुझको क़त्ल कर दोगे, तो एक ख़ूनी के क़त्ल करोगे और एहसान करोगे, तो एक शुक्रगुज़ार पर एहसान होगा और अगर फ़िद्या चाहते हो तो जो मांगोगे दूंगा। आप (सल्ल०) यह सुनकर ख़ामोश हो गये। दूसरे दिन फिर यही सवाल-जवाब हुआ। तीसरे दिन भी जब सुमामा ने आप (सल्ल०) के सवाल का यही जवाब दिया, तो आप (सल्ल०) ने उनको खंभे से खुलवाकर आज़ाद कर दिया। इस क्षमाशीलता का सुमामा पर प्रभाव यह हुआ कि उन्होंने क़रीब ही में जाकर ग़ुस्ल किया और वापस आकर मुसलमान हो गये और निवेदन किया या रसूलुल्लाह (सल्ल०) पहले मेरी नज़र में आपसे ज़्यादा कोई दुश्मन व्यक्ति न था और अब दुनिया में आप से ज़्यादा महबूब कोई व्यक्ति नहीं। आपके धर्म से ज़्यादा मेरी आंखों में कोई बुरा धर्म न था। अब वही धर्म सबसे ज़्यादा महबूब है। कोई शहर आपके शहर से ज़्यादा नापसन्दीदा न था, अब वह सबसे ज़्यादा पसन्दीदा है। (दीने रहमत, शाह मुईनुद्दीन नदवी, शीर्षक 'दुश्मनाने इस्लाम के साथ रसूल (सल्ल०) का सलूक)

ये क़ैद से पहले मुसलमानों से नफ़रत करते थे और क़ैद के बाद मुहब्बत करने लगे। यह इस व्यवहार ही का तो करिश्मा था, जो उनके साथ किया गया था। युद्धबंदियों के साथ सद्व्यवहार का जो नमूना अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बार-बार पेश किया था, उसका मुसलमानों ने विभिन्न दौरों में किस तरह अनुसरण किया, यह बताने के लिए हम केवल सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की एक मिसाल पेश कर रहे हैं–जब यरुशलम मुसलमानों के हवाले किया जा रहा था, उसके सिपाही और अधिकारियों ने जो उसके अधीन थे, शहर के गली-कूचों में प्रबंध व्यवस्था बनाये रखी। ये सिपाही और अधिकारी हर तरह के अत्याचार को रोकते थे और इसका नतीजा था कि ऐसी कोई घटना जिसमें किसी ईसाई को आघात पहुंची हो पेश न आयी। शहर के बाहर जाने वाले सारे रास्तों पर सुल्तान का पहरा था और एक निहायत ही भरोसेमंद सरदार 'बाबेदाऊद' पर नियुक्त था कि हर शहर वाले को जो फ़िद्या का धन अदा कर चुका है, बाहर जाने दे।

फिर सुल्तान के भाई अल-आदिल, बतरीक़ और बालिमान के हज़ार ग़ुलाम आज़ाद करने के ज़िक्र के बाद लिखता है–"अब सलाहुद्दीन ने अपने सरदारों से कहा कि मेरे भाई अपनी ओर से और बालियान और बतरीक़ ने अपनी ओर से ख़ैरात की, अब मैं अपनी तरफ़ से भी ख़ैरात करता हूं और यह कहकर उसने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि शहर के सारे गली-कूचों में मुनादी कर दें कि सारे बूढ़े आदमी जिनके पास फ़िदया का धन अदा करने को नहीं है आज़ाद किये जाते हैं और वे जहां जाना चाहते हैं जा सकते हैं, और ये सब लोग शहर से निकलना शुरू हुए और सूरज निकलने से लेकर सूरज डूबने तक इनकी सफ़ें शहर से निकलती रहीं। यह ख़ैरो-ख़ैरात थी, जो सलाहुद्दीन अय्यूबी ने असंख्य मुहताजों और ग़रीबों के साथ की।"

('तारीख़े दावत व अज़्मियत', जिल्द प्रथम, पृष्ठ-268)


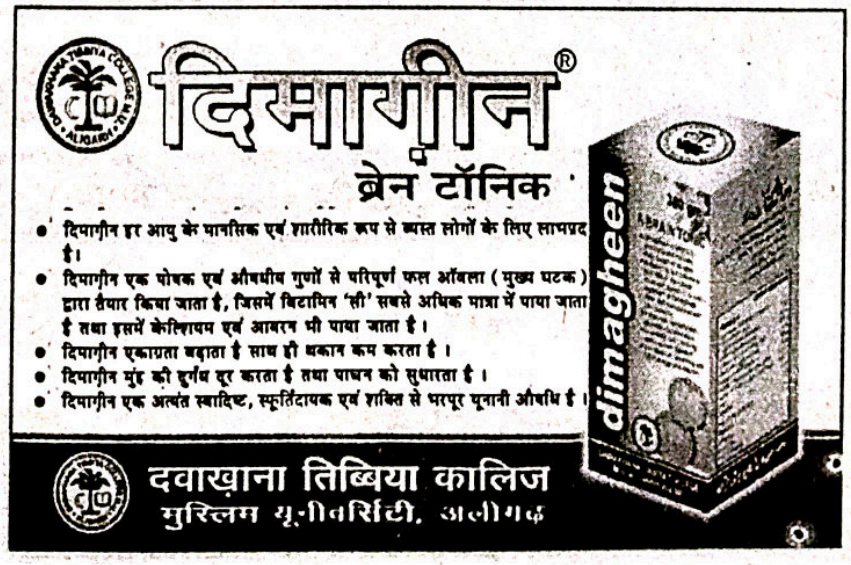

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़



# HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

*A/c Rooms & Non A/c Rooms*

*With*

*Attatch Bath Rooms*

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माक़ूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

# हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र (रज़ि०)

● संपादन प्रभाग

हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र (रज़ि०) एक ऐसी सहाबिया हैं, जिनके पिता, दादा, बहन, पति और बेटे सभी को अल्लाह के रसल (सल्ल०) के साथ रहने का सम्मान प्राप्त है । आपके पिता हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) हैं, जो आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी में आपके गहरे दोस्त रहे और आपकी मृत्यु के बाद आप (सल्ल०) के ख़लीफ़ा बने । उनके दादा अब अतीक़ (रज़ि०), हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के पिता थे । उनकी बहन हज़रत आइशा ताहिरा (रज़ि०) थी, जो उम्मुल मोमेनीन (सारी उम्मत की मां) थीं और जिनकी पाकीज़गी का एलान स्वयं अल्लाह तआला ने अपने कुरआन में किया है । हज़रत असमा (रज़ि०) के पति ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) थे और उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) थे । संक्षेप में इतना जान लेना ही काफ़ी है कि वे हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र (रज़ि०) हैं ।

हज़रत असमा (रज़ि०) सबसे पहले इस्लाम क़बल करने वालों में से एक थीं । सत्तरह मर्दों और औरतों के बाद आपने इस्लाम क़बूल कर लिया था । उन्हें 'ज़ातुन्नातक़ैन' के नाम से भी पुकारा जाता है । उन्हें इस नाम से इसलिए पुकारा जाता है, क्योंकि उन्होंने हिजरत के समय अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और अपने पिता हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के लिए रास्ते के खाने-पीने की व्यवस्था की थी । और जब इन चीज़ों को बांधने के लिए कोई चीज़ न मिली तो उन्होंने अपने कमरबंद के दो टुकड़े किये और एक टुकड़े से खाने की पोटली और दूसरे से मशकीज़े (पानी के बर्तन) का मुंह बांध दिया ।

जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को इसका पता चला तो उन्होंने उनके लिए अल्लाह से दुआ फ़रमायी कि अल्लाह इसके बदले में उन्हें जन्नत में दो कमरबंद अता फ़रमाए । उसी वजह से उन्हें 'ज़ातुन्नातक़ैन' के नाम से पुकारा जाता है । 'नातक़ैन' अरबी में कमरबंद को कहते हैं ।

उनकी शादी हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) से हुई थी । हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) एक ग़रीब व्यक्ति थे । उनके पास कोई नौकर-चाकर नहीं था, जो उनकी सेवा करता । एक घोड़े के सिवा उनके पास कुछ भी न था । घर का ख़र्च चलाना भी कठिन था । इस स्थिति में हज़रत असमा उनके लिए बेहतरीन जीवन संगिनी सिद्ध हुईं । वे उनकी सेवा करतीं । उनके घोड़े की देख-भाल करतीं । घोड़े के चारे के लिए खजूर की गुठलियां भी पीसती थीं, यहां तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें मालो-दौलत से नवाज़ दिया और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) की गिनती शहर के गिने-चुने धनी लोगों में होने लगी ।

हज़रत असमा (रज़ि०) में अच्छे आचार-विचार, शरीफ़ाना आदतें, असाधारण बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ सहनशीलता आदि श्रेष्ठ गुण इकट्ठे हो गये थे, जो मर्दों में भी कभी-कभी ही इकट्ठे हो पाते हैं । उनकी दानशीलता की तो मिसाल दी जाती थी । उनके पुत्र हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) के अनुसार–"मैंने कभी किसी महिला को नहीं देखा जो मेरी ख़ाला हज़रत आइशा (रज़ि०) और मेरी मां हज़रत असमा (रज़ि०) से अधिक दानी हों । हां, दोनों में एक अन्तर अवश्य था । मेरी ख़ाला का हाल यह था कि वह चीज़ों को जमा करती रहती थीं यहां तक कि जब उनके पास काफ़ी चीज़ें जमा हो जातीं तो वे उन्हें ज़रूरतमंदों में बांट दिया करती थीं । लेकिन मेरी मां किसी चीज़ को अगले दिन के लिए बचाकर नहीं रखतीं थीं ।"

हज़रत असमा (रज़ि०) बहुत ही बुद्धिमान और दूरदर्शी महिला थीं और कठिन परिस्थितियों में बहुत ही बुद्धिमानी से काम लेती थीं । हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ हिजरत के लिए रवाना हुए, तो अपना सारा माल, जो कुल 6 हज़ार दिरहम था, अपने साथ लेते गये और अपने घर वालों के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा। जब उनके पिता अबू क़हाफ़ा को–जिन्होंने उस समय तक इस्लाम क़बूल नहीं किया था उनके जाने की सूचना मिली, तो उन्होंने घर आकर हज़रत असमा से कहा–

"ख़ुदा की क़सम, मेरा विचार है कि अबूबक्र न केवल यह कि तुम लोगों को अकेला छोड़ गये हैं, बल्कि अपने साथ अपना माल भी लेते गये हैं। इस तरह तुम लोगों को माली परेशानी में डाल गये हैं।"

लेकिन हज़रत असमा (रज़ि॰) ने उनको शांत करने के लिए कहा, "नहीं, दादा जान, ऐसी बात नहीं है। वे हमारे लिए काफ़ी माल छोड़ गये हैं।"

फिर उन्होंने बहुत-सी कंकड़ियां जमा कीं और उन्हें दीवार में बने हुए उस ताक़ में रख दिया, जिसमें वे अपना माल रखा करते थे और उनके ऊपर एक कपड़ा डाल दिया।

यहां उल्लेखनीय है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) के पिता अंधे थे। हज़रत असमा ने अपने दादा का हाथ पकड़ते हुए कहा–

"दादा जान! देखिए वह हमारे लिए कितना अधिक माल छोड़ गये हैं।" दादा ने कपड़ों से ढके उन कंकड़ियों पर हाथ रखते हुए कहा, "तब कोई हर्ज नहीं है। यदि वे यह सारा माल तुम लोगों के लिए छोड़ गये हैं, तो बहुत अच्छा किया है।"

अस्ल में हज़रत असमा बड़े मियां को शांत करना चाहती थीं। इसके अलावा वे यह भी नहीं चाहती थीं कि कोई उनके ऊपर अपना माल ख़र्च करे, क्योंकि कोई शिर्क करने वाला उनके ऊपर ख़र्च करे, यह उन्हें पसन्द न था, चाहे वे उनके दादा ही न हों।

इतिहास हज़रत असमा (रज़ि॰) के सारे कारनामों को भुला सकती है, मगर अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) से उनकी अंतिम मुलाक़ात को नहीं भुला सकती। इस अवसर पर उन्होंने जिस बुद्धिमानी, सहनशीलता, दूरदर्शिता, होशियारी और ईमानी शक्ति का प्रदर्शन किया उसकी मिसाल मानव इतिहास में मिलना मुश्किल है।

यज़ीद बिन मुआविया की मृत्यु के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) के हाथ पर ख़िलाफ़त की बैअ़त की गयी। और परा मदीना, मिस्र, इराक़, ख़ुरासान और सीरिया का अधिकांश हिस्सा उनके अधीन हो गया। इसके तुरंत बाद बनू उमैया ने हज्जाज बिन यूसुफ़ के नेतृत्व में एक बहुत बड़ी सेना उनके मुक़ाबले के लिए भेजी। लड़ाई हुई और


**M/s. ABBAS SOAP FACTORY**

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

**PRODUCTS**

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 0810022613 7 (Mohd. Abbas)
M : 0983149623 7 (Mohd. Khalid)
M : 0898160583 4 (Mohd. Khalid)

दोनों ही सेनाओं ने बहादुरी का प्रदर्शन किया । हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) बहुत बहादुरी से लड़े, लेकिन धीरे-धीरे उनके समर्थक उनका साथ छोड़ते गये । अंत में उनके थोड़े से बचे-खुचे साथी बैतुल्लाह में पनाह लेने पर मजबूर हो गये ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) अपनी शहादत के कुछ घंटे पहले अपनी मां यानी हज़रत असमा (रज़ि॰) की सेवा में हाज़िर हुए । उस समय तक वे बहुत बूढ़ी हो चुकी थी । उनके आंखों से रोशनी भी समाप्त हो चुकी थी ।

हज़रत असमा (रज़ि॰) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) को सलाम का जवाब देने के बाद पूछा–

"अब्दुल्लाह ! इस समय जबकि हज्जाज की तोपों से ख़ाना काबा पर बमबारी हो रही है, और मक्के के दरो-दीवार कांप रहे हैं, तुम किस ज़रूरत से यहां आये हो ?"

"अम्मी ! मैं इस समय आपसे कुछ ज़रूरी सुझाव के लिए उपस्थित हुआ हूं ।" उन्होंने जवाब दिया ।

"मुझसे सलाह लेने आये हो ! किस मामले में ?"

"अधिकतर लोगों ने मेरा साथ छोड़ दिया है । वे लोग कुछ तो हज्जाज के भय से और कुछ भौतिक हितों के कारण मेरा साथ छोड़कर चले गये हैं, यहां तक कि मेरे लड़के और घर वालों ने भी मेरा साथ छोड़ दिया है । अब मेरे साथ केवल थोड़े से आदमी ही बच गये हैं । उनका भी हाल यह है कि जब उनकी सहनशक्ति जवाब दे जाएगी तो वे भी घंटे दो घंटे से अधिक नहीं टिक सकेंगे ।

दूसरी ओर बनू उमैया के संदेशवाहक बराबर मेरे सामने यह पेशकश कर रहे हैं कि यदि मैं हथियार डाल दूं और अब्दुल मलिक बिन मरवान की बैअ्त कर लूं, तो वह मेरी हर मांग मानने को तैयार हैं ।"

"अब्दुल्लाह ! यह तुम्हारा अपना मामला है । और तुम स्वयं अपने बारे में अधिक अच्छा समझ सकते हो । यदि तुम्हें अपने दृष्टिकोण के हक़ होने का विश्वास है और तुम हक़ की दावत दे रहे हो तो तुम अपने दृष्टिकोण पर डटे रहो और अपने उन साथियों की तरह धैर्य और संयम से काम लो, जिन्होंने तुम्हारे झंडे के नीचे लड़ते-लड़ते अपनी जान दे दी है । यदि तुमने उसके द्वारा दुनिया हासिल करना चाहा था तो तुम एक बहुत ही बुरे इन्सान हो कि ख़ुद को भी हलाक किया और अपने आदमियों को भी ।" यह कहते हुए उनका स्वर ऊंचा हो गया ।

"लेकिन इस परिस्थति में मैं आज निश्चित रूप से क़त्ल कर दिया जाऊंगा ।" हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने जवाब दिया ।

"यह तुम्हारे लिए इस बात से बेहतर है कि तुम अपने आपको हज्जाज के हवाले कर दो और बनू उमैया के लड़के तुम्हारे सिर से खेलें ।"

"मैं मरने से नहीं डरता, बल्कि मुझे इस बात का भय है कि वे मेरा अंग-भंग कर देंगे ।" हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने कहा–

"क़त्ल होने के बाद ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिससे आदमी भय महसूस करे । इसलिए कि बकरी जब ज़ब्ह कर दी गयी तो खाल खींचने से उसे कोई तकलीफ़ नहीं होती ।" हज़रत असमा (रज़ि॰) ने फ़रमाया ।

यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह का मुखमंडल ख़ुशी से चमक उठा । उन्होंने जोश भरे लहजे में कहा–

"अम्मी ! कितनी महान हैं आप ? और कितनी महान है आपकी सोच ? मैं इस समय आपके पास यही बातें सुनने के लिए हाज़िर हुआ था । ख़ुदा की क़सम, न मेरे हौसले पस्त हुए हैं, न मेरे अन्दर कोई कमज़ोरी आयी है । ख़ुदा गवाह है कि मैं जिस काम के लिए उठ खड़ा हुआ हूं, उसका प्रेरक दुनिया और दुनिया का ऐश व आराम नहीं है । बल्कि मेरी नज़र तो इस बात पर है कि जिन चीज़ों को अल्लाह ने हराम क़रार दिया था, उसे हलाल कर लिया गया है । और अब मैं आपके प्रिय चीज़ की ओर जा रहा हूं ! जब मैं क़त्ल कर दिया जाऊं तो दुखी होने के बदले मेरा मामला ख़ुदा पर छोड़ देना ।"

"मुझे तुम्हारे ऊपर दुख तब होता जब तुम बुराई के रास्ते में क़त्ल किये जाते ।" हज़रत असमा (रज़ि॰) ने कहा–

"अम्मी ! आप संतुष्ट रहें कि आपके बेटे ने न तो कभी किसी इन्कारी की ओर बढ़ा, न किसी बदकारी में लिप्त रहा, न ख़ुदा के आदेशों की अवहेलना की, न किसी को अमान देकर उससे ग़द्दारी की, न किसी मुसलमान या ज़िम्मी पर जान-बूझकर कोई अत्याचार किया, और न अल्लाह की ख़ुशनूदी से बढ़कर किसी और चीज़ को तरजीह दी । ये बातें मैंने अपनी पाकीजगी और तहारत दर्शाने

के लिए नहीं कही हैं, क्योंकि अल्लाह तआला मेरे बारे में मुझसे कहीं अधिक जानता है । मैंने ये बातें केवल इसलिए कही हैं ताकि आपके दिल में कोई खटक न रहे और आप संतुष्ट रहें ।'' हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने कहा–

''शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने तुमको अपने और मेरे पसन्दीदा रास्ते पर चलाया । मेरे बच्चे ! मेरे निकट आ जाओ ताकि मैं तुम्हारी ख़ुशबू सूंघ लूं । और तुम्हारे शरीर को स्पर्श कर लूं, क्योंकि यह तुम से आख़िरी मुलाक़ात है ।'' हज़रत असमा (रज़ि॰) ने कहा–

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) झुक कर उनको चूमने लगे । और वह अपनी नाक को उनके सर, चेहरे, और गर्दन पर फेर कर सूंघने और बोसा देने लगीं । और उन्होंने अपने हाथों को उनके बदन पर फेरते हुए अचानक यह कहते हुए उनको वापस खींच लिया ।'' अब्दुल्लाह ! यह क्या चीज़ है जो तुम पहने हुए हो ?''

''यह मेरी ज़िरह है ।'' उन्होंने जवाब दिया । ''बेटे ! यह उस व्यक्ति का लिबास नहीं है, जिसके मन में शहादत की इच्छा हो ।'' हज़रत असमा (रज़ि॰) ने कहा–

यह तो मैंने दिल की संतुष्टि के लिए पहन रखा है ।'' उन्होंने कहा–

''इसे अपने शरीर से अलग कर दो इस तरह तुमको तेज़ी से हरकत करने में आसानी होगी । और पूरी शक्ति से शत्रु पर हमला कर सकोगे । और उसकी जगह लंबा-सा पजामा पहन लो ताकि जब तुम गिरो तो तुम्हारा सतर न खुलने पाये ।'' हज़रत असमा (रज़ि॰) ने कहा–

उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने अपनी ज़िरह उतार दी । और अपने पजामे को कसकर बांध लिया और यह कहते हुए युद्ध स्थल की ओर चल पड़े ।

''अम्मी ! मेरे लिए दुआ में कोताही न कीजिएगा ।'' और हज़रत असमा (रज़ि॰) ने दुआ के लिए अपने दोनों हाथों को आसमान की तरफ़ उठा दिया ।

''या अल्लाह ! रात के अंधेरे में जब लोग मीठी नींद के मज़े ले रहे होते हैं–रात को देर तक क़ियाम करना, (यानी नफ़्ल नमाज़ पढ़ना), उसका रोना, गिड़गिड़ाना और उसकी सिसकियों पर रहम फ़रमाना ।

''या अल्लाह ! मक्का और मदीना की गर्म दुपहरी में रोज़ा रखकर उसके भूख व प्यास की सख़्ती सहन करने पर रहम करना ।''

''मेरे रब ! उसके अपने माता-पिता पर किये गये अच्छे सलूक के कारण उस पर रहम करना ।

''मेरे माबूद ! मैंने उसको तेरे हवाले कर दिया । और उसके बारे में तेरे फ़ैसले पर अपना सिर झुका लिया । मुझे को सब्र करने का बदला अता फ़रमा ।

उस दिन सूरज डूबने से पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) अपने रब के रहमत के साये में पहुंच चुके थे । और उनकी शहादत को दस दिन भी नहीं बीते थे कि हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र (रज़ि॰) भी उनसे जा मिलीं । 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ।' उस समय हालांकि उनकी आयु एक सौ साल से अधिक हो चुकी थी, परन्तु उस आयु में भी उनका एक भी दांत नहीं टूटा था । और न उनकी बुद्धि एवं विवेक में कोई अन्तर न आया था ।

## कविता

# न छीनो

न छीनो बचपन इनका
बचपन वापस नहीं आता ।
करने दो इन्हें थोड़ा बचपना
न टोको न रोको इन्हें
न पाबंदियां लगाओ
भीगने दो बारिश में
खेलने दो धूल मिट्टी में
करने दो थोड़ी-सी मनमानी
हंसने खिलखिलाने दो
करने दो मासूम शरारतें
बचपन के ये दिन इनके भी
देखते-देखते बीत जाएंगे
फिर ये हमारी तरह
गंभीर होकर रह जाएंगे ।
आज भी बस्ते के बोझ तले
कोचिंग के भागदौड़ में
होमवर्क की चिंता में
घूलते रहते हैं ये बेचारे !

**ओमप्रकाश बजाज**
पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर

# विश्वास करें, मगर उसूलों से समझौता न करें

■ के० कविता
(एस०ए०एल०, कोरवा, अमेठी, उ०प्र०)

पुराणों या ग्रंथों में स्त्री में शक्ति का वास बताया गया है, करुणामयी मूर्ति माना गया है । स्त्री को अतिसंवेदनशील एवं कोमल भावनाओं की अथाह सागर स्वीकारा गया है । साथ ही साथ प्रकृति की असहनीय प्रसव पीड़ा को सहकर ये जननी का रूप भी लेती है । अपितु आज भी यह एक वस्तु है । प्राचीन काल में एक स्त्री पांडवों के द्वारा जुए में वस्तु के रूप में रखी गयी, तो रामायण में रावण द्वारा सीता उठा ली गयी । कभी गौतम ऋषि के द्वारा अहिल्या को श्राप मिला तो कभी कुन्ती को सज़ा ।

बचपन में मैं एक कहानी "फिर न कहना" पढ़ी थी । वह कहानी मेरी स्मृति पटल से ओझल नहीं होती । आज लगभग 20 वर्ष बाद भी मुझे वह कहानी याद आती रहती है । इसी तरह की एक कहानी मेरे जीवन में घटी, जो कि पाठकों तक पहुंचाना चाहती हं । हो सकता है यह कहानी किसी की समस्या का निदान बन सके ।

जीवन एक अनुभवों की शृंखला होती है, जिससे हम अपने आने वाली समस्याओं को हल करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं । मैंने जो कहानी पढ़ी है, वह एक सावली-सी लड़की की कहानी है जो कुछ शांत स्वभाव वाली है ।

मैं स्वयं भी शांत एवं औसतन शक्ल-सूरत वाली हूं । पढ़ने के लिए वह घर से दूर हास्टल में रहने के लिए गयी । अपने में शांत रहने वाली यह लड़की न तो ज़्यादा किसी से बात करती थी और न बहस । फिर भी एक शख़्स इसके पीछे इस क़दर लगा कि आख़िरकार इसकी ज़िन्दगी बदल गयी ।

इसने कई बार यह विचार किया कि पढ़ाई छोड़ दें मगर चूंकि सामान्य परिवार से आयी हुई थी, इसलिए उसे पढ़ना ज़रूरी है । अन्तर्मुखी व्यवहार की वजह से अपनी इस तकलीफ़ को वह किसी से भी शेयर कर सकी ।

हर बार वह एक अलग रूप में मिलता मानो ऐसा लगता कि उसके बग़ैर वह एक पल भी नहीं रह सकता है । जब-जब ये लड़की उसे देखती तो घबरा जाती मगर कुछ नहीं कर सकती । सरल एवं साधारण स्वभाव वाले कभी किसी को हानी नहीं पहुंचाते, वे धर्म एवं अधर्म के बारे में सोचते हैं । वे न्याय एवं अन्याय के बारे में विचार करते हैं । साथ ही साथ अपने ऊपर गुज़र रही पीड़ा के बारे में तो सोचते ही नहीं है ।

वह लड़की तो अविवाहित थी, लेकिन मैं विवाहित और साथ ही साथ एक बच्चे की मां । मैं परिवार से दूर आकर काफ़ी संघर्ष के पश्चात इस नौकरी में ज्वाइन की थी । मेरे आंधप्रदेश के रहने वाले एक अधिकारी जो कि अविवाहित थे, वे मुझ से प्राय: बात करने के प्रयत्न करते थे । चूंकि मैं इस नौकरी को अपने शौक़ पूरे करने के लिए नहीं, बल्कि अपने बच्चों के लिए घर से इतनी दूर निकल आयी थी । इसलिए छोड़ नहीं सकती थी ।

मैं जब कभी आफ़िस आती तो वह मुझे फ़ोन करता और परेशान करता । उसकी मेरे पति से भी दोस्ती थी, मुझे यह समझ में नहीं आता कि मैं अपनी इस समस्या को आफ़िस में किस से कहूं, क्योंकि वह मुझ से ये भी कहता कि तुम विवाहित हो और तुम्हारे पति तुम से दूर रहते हैं, इसलिए तुम्हें ही सब ग़लत कहेंगे ।

मैं तो शादी-शुदा भी नहीं हूं और दूसरी ओर से मैं एक अधिकारी हूं । चूंकि मैं अधिकारी नहीं हूं, इसलिए मुझे वह बहुत कमतर समझता था, फिर भी हर रोज़ परेशान करता । मैं जिस भी विभाग में जाती, तो वह वहां फ़ोन करता और मुझे कई तरहों से परेशान करता । आख़िर मैं एक शादीशुदा महिला हूं, मुझे हर पल इस समाज से डर लगता कि कहीं कोई जान जाए, तो मुझे ही ग़लत समझेंगे ।

शुरुआत में उसने मेरे पति से दोस्ती की और बीच-बीच में मुझसे बाते करते हुए मेरे स्वभाव को पढ़ लिया था । मैं एक सामान्य रंग-रूप वाली एवं संकोची स्वभाव वाली महिला हूं । मुझे प्रारंभ से ही अपनी संस्कृति, अपने संस्कार, अपने परिवार से बेहद लगाव है । मेरी सोच बहुत-ही सरल एवं साधारण है । मैं कभी भी ये नहीं सोचती हं कि मेरे द्वारा

कोई परेशान हो । मैं एक सामाजिक प्राणी हूं ।

पुन: मैं अपनी कहानी की पात्र के बारे में बताना चाहती हूं । यूं ही दिन गुज़रते रहे और वह व्यक्ति उसकी पीछा करता रहा । उसे अब कॉलेज जाने से भी शर्म एवं डर लगता । जब वह उसे देख लेती तो उसकी धड़कन बढ़ जाती और वह घबराने लगती । उसने कई बार पढ़ाई छोड़ने का निर्णय लिया, मगर अपने परिवार के स्थिति के बारे में सोचती और और रुक जाती । मैं भी ठीक उसी की तरह नौकरी को लेकर सोचती कि इतनी दूर निकल आयी हूं, ऊपर से एक बेटी भी साथ में है । क्या इस नौकरी के वास्ते मुझे उसकी प्रताड़ना सहनी चाहिए ? कई बार तो मेरे दिमाग़ में यह आता कि उसके बारे में कम्प्लेन कर दूं । मगर फिर सोचती कि मैं एक मात्र नॉन लोकल महिला । क्या यह समाज मेरी बात को सच मानेगा ? एक अधिकारी था, मैं यह सब सोचते हुए शांत हो जाती । मुझे यह नौकरी काफ़ी जिद्दोजहद से मिली थी, मैं इस पर अपने ऊपर कोई भी आंच आने देना नहीं चाहती थी ।

एक दिन जब वह लड़की कालेज जा रही थी, तो वह उसके पीछे आता रहा । साथ ही साथ उसकी प्रशंसा भी किये जा रहा था । कभी कहता कि वह उसके बग़ैर नहीं रह सकता, कभी कहता कि वह उसके लिए ही जी रहा है ।

उसकी इन बातों से उसके मन में कहीं न कहीं एक ऐसी भावना जाग उठी थी, जो उसे उसके बारे में सोचने के लिए मजबूर करती थी । अब वह कुछ भी काम करती तो उसे उसका चेहरा याद आता उसके आंखों में तैरते आंसू नज़र आते । उसे अब लगने लगा कि वह उसे वास्तव में चाहता है ।

उस दिन से उसके दिल में कुछ अरमान जाग उठे, उसे हर वक़्त उसकी याद आती । उसके बातों में उसे सच्चाई नज़र आती । उसके वादों में सच्चाई नज़र आती । उसकी हर बात उसे याद आती । हमेशा उसका चेहरा घूमता रहता, न तो उसे सोने का सुध था और न जागने का । पूरी-पूरी रात उसे नींद नहीं आती । उसके बारे में सोचकर वह शांत हो जाती, शुरुआत की घबराहट अब एक ठहराव में बदल चुकी थी ।

जिस लोकलज्जा से वह उसे देखने में घबराहट महसूस करती थी, अब धीरे-धीरे सुरक्षा कवच-सा महसूस हो रहा था । जीवन के ऐसे मोड़ में उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि मानो एक पड़ाव-सा मिल गया हो ।

धीरे-धीरे उसके व्यवहार में परिवर्तन आ रहा था, उसे अब दुनिया ख़ूबसूरत-सी लगने लगी, उसे अपने लिए सोचना अच्छा लग रहा था । पहले वह गुमसुम-सी रहने वाली अब वह बोलने लगी, अकेले में गाना गुनगुनाती । क्रमश: वह स्वयं अपने भीतर एक बदलाव महसूस कर रही थी । उसे ऐसा लगता मानो कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो ।

प्रति पल दर्पण निहारती
करती उसकी प्रतीक्षा
दबे पांव से कोई आ जाए
रहती ऐसी हमेशा इच्छा ।

अब जब भी वह घर से निकलती तो उसे याद करते हुए निकलती, उसके बारे में सोचते हुए उसे ढूंढ़ते हुए निकलती । ज्यों ही वह उसे देख लेती, उसे एक अनोखी खुशी मिल जाती । यदि वह उसका पीछा न करता तो दुखी हो जाती । पूछने की इच्छा होती कि क्यों नहीं आया मगर भीतर एक डर भी समाया था कि कहीं कोई कुछ और न सोचे ।

अब उस लड़के को यह मालूम हो चुका था कि अब वह बदल चुकी है । उसकी मेहनत रंग ला चुकी है । अब वह उसके पीछे नहीं जाता, न तो उसकी ख़बर लेता, न उसे देखने की तमन्ना करता । न तो कहीं भागता-फिरता ।

अब वह स्वयं झुक चुकी थी, धीरे-धीरे बातों का सिलसिला शुरू हो चुका था । एक दूसरे की हरेक बात शेयर होती । एक-दूसरे का ख़याल रखा जाता, कुछ ऐसा लगता मानो दोनों एक-दूसरे के लिए बने हों ।

एक-दूसरे से मिलते-जुलते कई महीनों बीत चुके थे, फिर कुछ ऐसा हुआ बिना किसी ख़बर के वह दिखायी देना बन्द हो गया । उसे कुछ समझ में नहीं आया कि वह कहां चला गया ? क्यों चला गया, कई दिनों, महीनों से ढूंढ़ती रही, मगर उसका कोई ख़बर नहीं ।

रोज़ कालेज आती ढूंढ़ती मगर कोई ख़बर नहीं । इसी तरह से ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उसका वह साल भी बर्बाद हो गया, रोते, बिलखते हुए अपने अपनों को भी खो दिया ।

कई वर्ष गुज़र गये, अचानक उसका चार साल का बेटा दौड़ते हुए मां के पास आकर बोलता है--मां देखो आपसे

कोई मिलने आया है । मां अन्दर से ही आवाज़ लगाते हुए बोलती है, आप बैठ जाइए । ज्यों ही वह कमरे में कुर्सी लेकर बैठते हैं, बेटा कभी उनको देखता है और कभी दीवार पर टंगी फ़ोटो को देखता है, अंत में कहता है–मां इसका चेहरा पापा से मिलता है ।

मां क्या कहती है–इस बार तो कह दिये मगर "फिर न कहना" इस कहानी में उस पात्र के बारे में सोचती तो आंखों में आंस आ जाते ।

यह तो कहानी है जिसमें विश्वास के बदले में धोखा मिला । इस कहानी से मुझे हमेशा एक प्रेरणा मिलती रही है कि विश्वास करने से पहले उसे जानने की कोशिश करो । अब पुन: मैं अपने अनुभव उस अधिकारी के बारे में बताना चाहती हूं । उस व्यक्ति ने मेरे पति से दोस्ती की, जबकि मैं उनसे प्राय: कहती कि कभी किसी पर विश्वास मत कीजिए ।

मेरे पति बेहद साधारण एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं । उनके इस स्वभाव से प्राय: मुझे समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इनके इसी व्यवहार को जानने के बाद उसने मुझे परेशान करने की कोशिश की । मैं एक लंबे संघर्ष के पश्चात चूंकि इस नौकरी में आयी इसलिए मैं किसी तरह की परेशानी मोल लेना नहीं चाहती ।

मैंने एवं मेरे माता-पिता ने उस व्यक्ति को काफ़ी समझाने की कोशिश की, मगर वह अपने आदतों को सुधारना नहीं चाहती था । मेरे परिवार वालों ने उनके परिवार को भी फ़ोन करके उसके बारे में बताना चाहा, मगर वह अपने में परिवर्तन नहीं लाया ।

काफ़ी सोच-विचारने के बाद जब वह बदलने का नाम ही नहीं ले रहा था, ऐसे परिस्थितियों में मेरे भइया ने उसे काफ़ी मारा । उसके बाद वह व्यक्ति बदला और फिर कभी उसने कोई ग़लती नहीं की ।

इस पूरी कहानी को गुज़रने में दो साल लग गये । मैं बहुत परेशान रही । मगर उसकी शिकायत नहीं की । मेरे पति दक्षिण भारतीय व्यक्ति होने की वजह से उसे मदद करने की कोशिश की, जिसका परिणाम हमें यह मिला कि उसके बाद किसी की भी मदद करने से पहले वह कहानी याद आ जाती है ।

"क्या जाने, कौन जाने,
कौन इन्सान कैसा हो,
हमारी कल्पनाओं में जो होता है,
ईश्वर करे वो भी वैसा ही हो ।"

इन दोनों ही कहानियों में एक ही बात सामने है कि हम औरों की मदद तो करना चाहते हैं, मगर यह ज़रूरी नहीं है कि दूसरे भी आपकी सोच के अनुसार सच्चे इन्सान हो । आप दूसरों को जानने में कुछ समय दें ताकि आपके जीवन में कोई अनहोनी न हो ।

आप विश्वास करें मगर साथ ही साथ अपने सिद्धांतों एवं उसूलों से समझौता न करें, यही मेरी सलाह है ।


हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

**प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट**

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs.1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

**मासिक कान्ति**

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

# HALAL
## INVESTMENT & FINANCE

**Eat Halal Earn Halal**

**HALAL**
**INVESTMENT & FINANCE**

**Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions**

## Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

**Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99**
**Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,**
**N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)**

**Contact Us : 9022665544, 9869641648**

# सामाजिक अन्याय के प्रबल विरोधी थे अदम गोंडवी



■ चन्द्रभूषण सिंह यादव
(देवरिया)

फ़रवरी 2011 में मैं इलाहाबाद गया था । रात में इलाहाबाद ही रुकना पड़ गया । सुबह जाने के बाद अख़बार पढ़ रहा था जिसमें 'धरती की सतह पर' ग़ज़ल संग्रह की समीक्षा छपी थी । मैं पूरी समीक्षा पढ़ गया । घर आने के बाद मैंने अनुज प्रकाशन, इन्द्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, ज़िला-प्रतापगढ़ (उ०प्र०) को इस ग़ज़ल संग्रह को वी०पी०पी० से भेजने का अनुरोध पत्र भेजा । अदम गोंडवी रचित यह ग़ज़ल संग्रह 30 अप्रैल 2011 को रजिस्टर्ड डाक से मुझे निःशुल्क प्राप्त हुआ । मैं पूरे ग़ज़ल संग्रह को एक सांस में पढ़ गया ।

ग़ज़लों को पढ़ने के बाद मेरे ज़ेहन में बड़ी देर तक उथल-पुथल मची रही । राजपूत (ठाकुर) बिरादरी में जन्मे स्मृतिशेष श्री रामनाथ सिंह उर्फ़ अदम गोंडवी को उनकी लेखनी से जो मुझे समझ में आया वह उनके घोर समतावादी, मानवतावादी, वंचित समाज को वास्तविक स्थितियों से अवगत कराने वाले वरिष्ठ क़लमकार का विराट रूप था ।

मैं निःसंकोच कह सकता हूं कि समाजवादी पार्टी को गठित करने वाले प्रायः सभी नेता बड़ी जातियों के थे और सामाजिक विद्रूपताओं के विरुद्ध बेबाकी से लिखने एवं आन्दोलन चलाने का काम भी उन्होंने ही किया है । फुले, पेररियार, अम्बेडकर ने भी सामाजिक विकृतियों के ख़िलाफ़ संघर्ष छेड़ा, लेकिन उसका असर उत्तर भारत में न के बराबर हुआ । यदि उत्तर भारत में सामाजिक समरसता के लिए किसी ने काम किया तो वह समाजवादी आन्दोलन ही है इस समाजवादी आन्दोलन के नायक बड़ी जाति के नेताओं मसलन डॉ० राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण मधुमिये आदि ने जहां ज़ोरदार तरीक़े से 'सोशलिस्ट पार्टी बांधी गांठ' का नारा दिया वहां पिछड़ों एवं दलितों को नेतृत्व करने हेतु बड़े पैमाने पर अवसर प्रदान किया । वर्तमान में जो कुछ बड़ी जाति के नेता समाजवादी पार्टी में है, यदि कोई पिछड़ा समता, समानता या सामाजिक परिस्थितियों का ज़िक्र करता है तो ये इसे अपना अपमान बताते हुए टीका-टिप्पणी करने लगते हैं तथा कुछ दिग्भ्रमित एवं लिखने-पढ़ने में विश्वास न रखने वाले पिछड़े नवजवान इसे जातिवादी बातें कहकर अपने आपको उनका पिट्ठू साबित करने में जुट जाते हैं ।

मैं ऐसी प्रवृत्ति के दोनों समूहों से श्री अदम गोंडवी जी को पढ़ने की सलाह देता हूं । अदम गोंडवी जी के उक्त ग़ज़ल संग्रह को पढ़कर उनकी मानवतावादी शख़्सियत अपने आप प्रकट हो जाती है । वे कहते हैं कि–

"वेद में जिनका हवाला हाशिये पर भी नहीं,
वे अभागे आस्था विश्वास लेकर क्या करें ?
लोकरंजन हो जहां शम्बूक-वध की आड़ में
उस व्यवस्था का घृणित इतिहास लेकर क्या करें ?"

अदम जी ने उपरोक्त पंक्तियों में पेरियार एवं अम्बेडकर के समस्त दर्शन को समेटते हुए स्पष्ट कर दिया है कि सनातनपंथी भले ही यह कहते रहें कि वेद पूरी दुनिया की श्रेष्ठ पुस्तक है, लेकिन इसमें इस देश के वंचित तबक़ों की बात एवं जज़्बात हाशिये पर भी दर्ज नहीं है । ऐसे में ये अभागे (दलित-पिछड़े) आस्था और विश्वास के नाम पर इसे क्यों ढोएं ? जिन धर्मग्रंथों को पवित्र वरिष्ठ बताया जाता है, उन्हें अदम गोंडवी जी ने बड़ी बेबाकी से घुणित इतिहास क़रार देकर अपनी चंद पंक्तियों में पूरा समतावादी दर्शन उढ़ेल दिया है ।

अदम जी भाग्यवाद पर करारा प्रहार करते हुए कहते हैं कि–

"इक हम हैं भुखमरी के जहन्नुम में जल रहे,
इक आप हैं दुहरा रहे क़िस्से नसीब के ।"

इसी तरह से अदम गोंडवी जी साम्प्रदायिक ताक़तों को ललकारते हुए उनका इतिहास बताते हुए कहते हैं कि ऐ आर्यद्ध पुत्रों, तुम भी तो लुटेरे हो, तुमने भी यहां के मल निवासी द्रविड़ों से उनकी सत्ता छीनी है, सिंधु घाटी की सभ्यता को तहस-नहस कर उन्हें पिछड़ा दलित बनाया है । वे लिखते हैं कि–

"तारीख़ बताती है तुम भी तो लुटेरे हो,
क्या द्रविणों से छीनी जागीर बदल दोगे ?
गर चन्द तवारीख़ तहरीर बदल दोगे,
क्या इससे किसी क़ौम की तक़दीर बदल दोगे ?"

वे साम्प्रदायिक उन्माद भड़काने वालों को ललकारते हुए कहते हैं कि–

"हिन्दू या मुस्लिम के एहसासात को मत छेड़िये,
अपनी कुर्सी के लिए जज़्बात को मत छेड़िये ।
ग़लतियां बाबर की थी, जुम्मन का घर फिर क्यूं जले?
ऐसे नाजुक वक़्त में हालात को मत छेड़िये ।
दोस्त मेरे ! मज़हबी नग़मात को मत छेड़िये ।"

अदम जीं राजपूत (सवर्ण) होने के बावजूद सत्य उद्घाटित करते हुए लिखते हैं कि–

"अन्त्यज-कोरी-पासी है हम, क्यूंकर भारतवासी हैं हम?
अपने को क्यों वेद में खोज, क्या दर्पन-विश्वासी हैं हम?
छाया भी छूना गर्हित है, ऐसे सत्यानाशी हैं हम,
धर्म के ठेकेदार बताएं, किस ग्रह के अधिवासी हैं हम?"

जाति व्यवस्था पर कोई इतनी करारी चोट करेगा, यह विरले देखने को मिलता है, लेकिन अदम गोंडवी को प्रायः सभी रचनाओं में ग़ज़ब का पैनापन है । उन्होंने पूरी जाति व्यवस्था पर हथौड़ा चलाते हुए करारा प्रहार किया है । उन्होंने लिखा कि–

"जो सबल है, धर्म, शासन तंत्र उनके साथ है,
निर्धना के पास पूंजी उसका अपना हाथ है ।
खेलते हैं ये कली से, फूल की मुस्कान से,
छीनते हक़ दूसरों का, जातिगत अभिमान से ।
गढ़ दिया दर्शन कि जो इस जन्म में बेहाल है,
भुखमरी की धूप में संतप्त है, कंगाल है ।
ये तुम्हारा धर्म, ये जन्मान्तर की कल्पना,
भाग्य का षड्यंत्र, काल्पित देवता की अर्चना ।
आज परदा उठ रहा तम-तोम से अज्ञान से,
को तुम्हारा ईश भी संत्रस्त है विज्ञान से ।"

**"जो सबल है, धर्म, शासन तंत्र उनके साथ है,
निर्धना के पास पूंजी उसका अपना हाथ है ।
खेलते हैं ये कली से; फूल की मुस्कान से,
छीनते हक़ दूसरों का, जातिगत अभिमान से ।
गढ़ दिया दर्शन कि जो इस जन्म में बेहाल है,
भुखमरी की धूप में संतप्त है, कंगाल है ।
ये तुम्हारा धर्म, ये जन्मान्तर की कल्पना,
भाग्य का षड्यंत्र, काल्पित देवता की अर्चना ।
आज परदा उठ रहा तम-तोम से अज्ञान से,
को तुम्हारा ईश भी संत्रस्त है विज्ञान से ।"**

अदम गोंडवी राजनीति, राजनेता को भी अपना विषय वस्तु बनाते हुए इनकी कमियों एवं कमज़ोरियों पर धारदार प्रहार करते हैं । उन्होंने दल-बदल पर लिखा है कि–

"मिले कुर्सी तो दलबदलू कहो क्या फ़र्क़ पड़ता है,
ये कोई वल्दियत है, पार्टी हर साल बदलेंगे ।"

सांसदों, विधायकों की ख़रीद-फ़रोख़्त से आहत अदम जी लिखते हैं–

"चन्द सिक्कों को एवज़ ईमान बेचा जा रहा,
ये हमारे देश की संसद है या नख़्ख़ास है ।"

उन्होंने नेताओं के झूठे नारों की पीड़ा से आहत होकर लिखा–

"इक अदद नारा उछालो आम जनता की तरफ़,
क़ैद कर लो अपने ड्राइंग-रूम में मधुमास को ।

नेताओं के 'रामराज' की संकल्पना पर अदम जी बेबाक लिखते हैं कि–

"काजू भूने हैं प्लेट में, विस्की गिलास में,
उतरा है रामराज विधायक निवास में ।"

अदम गोंडवी की लेखनी अन्याय, अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार के विरुद्ध तीव्रतम गति से चली है । उन्होंने अपनी रचनाओं में सत्य को सत्य ही बने रहने दिया है । बिना राग-द्वेष के अदम गोंडवी ने जाति एवं गोत्र की परवाह किये बग़ैर अन्यायी को अन्यायी एवं ग़लत को ग़लत रूप में दर्शा कर अपने विद्रोही चरित्र को जहां मज़बूत बनाया है, वहीं उन्होंने अपनी रचनाओं में यथार्थ को उसी रूप में चित्रित कर संपूर्ण समाज को झकझोर कर रख दिया है ।

सन 1973 में अपने गांव के हरखू दलित की बेटी कृष्णा के साथ ठाकुर जाति के नवजवानों द्वारा किये गये व्यभिचार एवं उसके बाद गांव के सवर्णों द्वारा थानेदार को मिलाकर दलितों की बस्ती फूंकने एवं उनकी पिटायी कराने की घटना से अदम मर्माहित गोंडवी ने "चमारों की गली" नामक रचना के ज़रिये पूरे देश में तूफ़ान खड़ा कर दिया । बी॰बी॰सी॰ हिन्दी सेवा ने अदम गोंडवी की इस रचना को प्रसारित कर पूरे देश और दुनिया में गोंडा की इस शर्मनाक घटना को मुद्दा बना दिया । मानवता को शर्मसार करने वाले क़ानून के शिकंजे में जकड़ दिये गये । अदम गोंडवी की इस रचना से गांव के सारे सजातीय लोग उनके दुश्मन बन गये, लेकिन अदम पूरे दम से अन्याय का प्रतिकार करते रहे । उन्होंने इस घटना पर तथा अपनी बिरादरी (ठाकुरों) के ऊपर लिखा है कि–

"ये समझते हैं कि ठाकुर से उलझना खेल है,
ऐसे बाज़ी का ठिकाना घर नहीं है, जेल है ।"

अदम गोंडवी का विद्रोही स्वरूप उनकी प्रत्येक रचना में स्पष्ट रूप से दिखायी देता है । महज़ 63 वर्ष की उम्र में लीवर सिरोसिस से पीड़ित अदम गोंडवी जी 18 दिसम्बर 2011 को इस दुनिया को अलविदा कह गये । ऐसा विद्रोही ग़ज़लकार इतना अभावग्रस्त जीवन जी रहा होगा, ऐसा ख़याल शायद ही किसी को हो । लखनऊ के एस॰पी॰जी॰आई॰ अस्पताल में भर्ती अदम की दवा एवं इलाज के लिए पैसों की क़िल्लत से जूझते रहे । लगभग तीन लाख रुपये का क़र्ज़ सिर पर लदा रहा, लेकिन यह फौलादी कवि अंत तक व्यवस्था से व्यवस्था परिवर्तन हेतु जूझता रहा ।

**"तारीख़ बताती है तुम भी तो लुटेरे हो,
क्या द्रविणों से छीनी जागीर बदल दोगे ?
गर चन्द तवारीख़ तहरीर बदल दोगे,
क्या इससे किसी क़ौम की तक़दीर बदल दोगे ?"**

**"हिन्दू या मुस्लिम के एहसासात को मत छेड़िये,
अपनी कुर्सी के लिए जज़्बात को मत छेड़िये ।
ग़लतियां बाबर की थी, जुम्मन का घर फिर क्यूं जले?
ऐसे नाज़ुक वक़्त में हालात को मत छेड़िये ।
दोस्त मेरे ! मज़हबी नग़मात को मत छेड़िये ।"**


# विशेष मैरिज ब्यूरो

**(Matrimony) ( शासन से मान्यता प्राप्त )**

सभी धर्म व जाति के अविवाहित/तलाक़शुदा/विधवा/विधुर-पुरुष, महिलाएं, लड़कियां विवाह हेतु संपर्क करें । आगामी एक माह तक सभी के लिए पंजीयन शुल्क फ्री/ नि:शुल्क पंजीयन । अपना बायोडाटा व फ़ोटो शीघ्र भेजें । दो हज़ार रुपये की इस विशेष छूट का लाभ उठाएं ।

**विश्वसनीय ही हमारा उद्देश्य ।**
**विश्वसनीय ही हमारी पहचान ।**

**संपर्क करें**

बी॰एस॰ बघेल सर, संचालक, गांगीवाड़ा,
ज़िला-छिंदवाड़ा (म॰प्र॰)

मोबाइल नम्बर : 9981848508, 9479692726

# आतंकवाद-मिथक और यथार्थ

❖ निहाल सग़ीर



आतंकवाद आज का ज्वलंत मुद्दा है । जो लोग इसके बारे में जानते हैं, वे भी इससे ठीक से परिचित नहीं हैं । इस पर अपना विचार प्रकट करना अपना हक़ समझते हैं । आतंकवाद का नाम लेकर दुनिया भर में और देश में भी बड़ी चालाकी से कुछ ऐसी क़ौमों के द्वारा जो इस्लाम और मुसलमानों से द्वेष रखती हैं, यह बात बड़ी सफलता के साथ फ़ैलायी जा चुकी हैं कि इस्लाम आतंकवाद की शिक्षा देता है और आतंकवादी गतिविधियों में अधिकांश मुसलमान लिप्त हैं । इस सिलसिले में कुछ तथ्यों पर नज़र डालना ज़रूरी है–

1. आतंकवाद क्या है ?

2. इसके कारण क्या हैं ?

3. क्या केवल मुस्लिम नाम वाली संस्थाएं ही आतंकवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं ?

4. क्या मुस्लिम नाम वाली हर उस संस्था को आतंकवादी संस्था मान लेना चाहिए, जिसकी सूची यहूदी मीडिया या यहूदियों के पंजे में गिरफ़्तार अमेरिकी साम्राज्य की ओर से जारी हो ?

5. और क्या आतंकवाद के संबंध से जिन मुस्लिम ग्रुपों को हमारे सामने पेश किया जाता है, हमें उन ख़बरों को ज्यों का त्यों सच मान लेना चाहिए ? हम इन बिन्दुओं पर सिलसिलेवार चर्चा करने एवं सच्चाइयों तक पहुंचने की कोशिश करेंगे–

1. आज आतंकवाद के मामले में जिन संगठनों को लिप्त बताया जाता है, अगर वे किसी क़ौम पर गिरोह के लिए आतंकवादी हैं तो किसी गिरोह या क़ौम और देश के लिए अच्छे माने जा सकते हैं । उदाहरण के रूप में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हम जिन लोगों को अपना आदर्श और हीरो मानते हैं, वही व्यक्ति साम्राज्यवादी शासन में महारानी एलिजाबेथ सरकार के बाग़ी और आतंकवादी थे, इसलिए सबसे पहले हमें आतंकवाद की परिभाषा निर्धारित करने की आवश्यकता है । दुर्भाग्यवश अभी तक दुनिया में इसकी कोई प्रमाणिक परिभाषा निर्धारित नहीं है ।

हर समुदाय या देश की इसके प्रति अलग-अलग राय है । कोई देश या समुदाय मुसलमानों की ओर से की जाने वाली इंतिक़ामी या जवाबी कार्रवाई को सीधे आतंकवाद से जोड़ देता है, चाहे वह समुदाय किसी अच्छे उद्देश्य के लिए कोशिश में लगा हो, लेकिन चूंकि वह मुसलमान है इसलिए एक मत से उसे आतंकवादी कह दिया जाता है और मीडिया की ओर से उसकी ख़ूब बुराई की जाती है, जिससे मीडिया जनता के बीच मुसलमानों की एक ख़ास छवि बनाने में सफल हो जाता है ।

बात यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाती, बल्कि चूंकि इस्लाम और मुस्लिम दुश्मन ताक़तों का एक एजेंडा यह भी है कि मुसलमानों को बांट करके उनकी शक्ति को तोड़ा जाए और राजनीतिक व आर्थिक स्तर पर उनको प्रभावहीन किया जाए ।

मुसलमानों के वैचारिक मतभेदों (मस्लकी इख़्तिलाफ़ात) उठाते हुए विभिन्न मस्लकी समुदाय की तहरीक को भी आतंकवाद से जोड़ दिया जाता है और दूसरे मस्लक के लोग

# कुछ विचारणीय पहलू

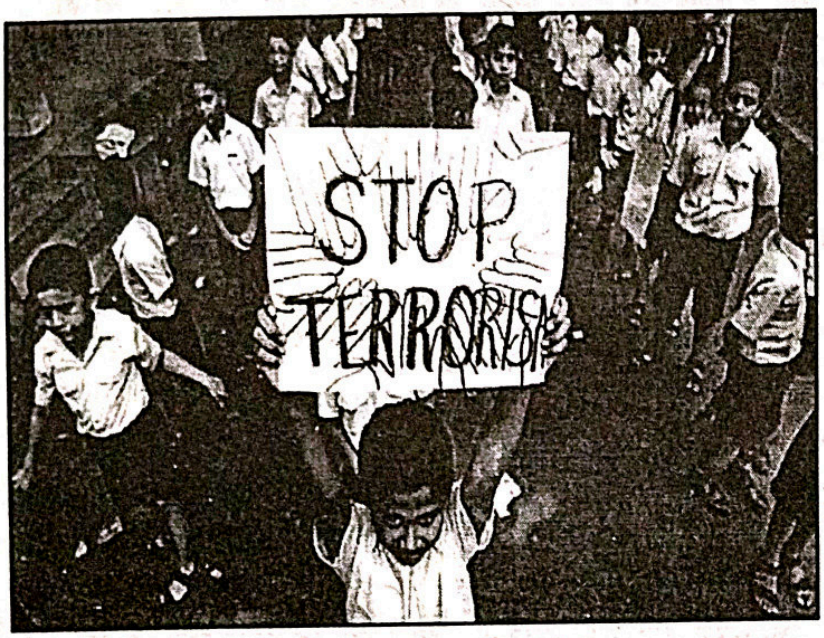


अपने विरोधियों को भी आतंकवादी कहकर संबोधित करते हैं, जो कि फ़िलहाल सीरिया और इराक़ आदि में देखने को मिल रहा है । और अब पेरिस हमले के बाद दो ख़ास मस्लकी समुदायों ने दो विभिन्न मस्लकी समुदायों को लगातार निशाना बनाना शुरू कर दिया है ।

मुसलमानों के मस्लकी मतभेद को बिखराव में बदलने में हमारा दुश्मन सफल हो चुका है और इसमें हमने स्वयं ही जाने-अनजाने अपने दुश्मनों की मदद की है । इसलिए हमें आतंकवाद की परिभाषा निर्धारित करने की मांग करनी चाहिए । इस्लाम का दृष्टिकोण इन्सानी जान की हुर्मत (सम्मान) के लिए क्या है, यह आये दिन आपके सामने बात आती रहती है । हमारा केवल इतना कहना है कि हर वह कार्रवाई जो किसी बेगुनाह और अबोध इन्सानी जानों के नष्ट होने का कारण बने वह आतंकवाद है, चाहे वह बम धमाकों में इन्सानी जानों का नुक़सान हो या साम्प्रदायिक दंगों में मुसलमानों का क़त्लेआम या सवर्णों के द्वारा दलित और अन्य पिछड़े वर्गों का क़त्ल और उनका सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर बहिष्कार या अमेरिका में किसी व्यक्ति के द्वारा स्कूलों में फ़ायरिंग, मासूम बच्चों का क़त्ल–यह सब भी आतंकवाद है ।

आधी सदी से भी अधिक अवधि से फ़िलिस्तीनी दुनिया के तथाकथित मानवाधिकारों के चैंपियन के साये में इसराईली आतंकवाद का शिकार हैं । लाखों फ़िलिस्तीनी क़त्ल कर दिये गये । दो वर्ष की अवधि में सीरिया का तानाशाह बशारुल असद के फ़ौजी ईरान और हिज़्बुल्लाह की मदद से तीन लाख से अधिक मासूमों का क़त्ल कर चुके हैं । आप देखेंगे कि इसी भारत की भूमि पर मुसलमानों और दलितों के विरुद्ध कैसी आतंकवादी घटनाएं घटित हुईं, लेकिन इन्हें केवल एक दंगा कहकर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है ।

कमीशन के द्वारा जांच करायी जाती है, कमीशन अपराधी की पहचान भी करता है, लेकिन उस पर कोई कार्रवाई नहीं की जाती है । लेकिन इसी दंगों और बाबरी मस्जिद की शहादत की प्रतिक्रिया में जब बम धमाका होता है, तो उसे सीधे-सीधे आतंकवाद से जोड़ दिया जाता है और सज़ाएं भी सुनायी जाती हैं, उस पर अमल भी होता है । यह केवल इस कारण है कि अभी तक केवल यह मानसिकता बनायी गयी है कि आतंकवाद केवल मुसलमानों की ओर से अंजाम दी जाने वाली कार्रवाई है, इसलिए सबसे पहले तो आतंकवाद की परिभाषा निर्धारित की जाए और उसकी एक सूची बनायी जाए कि क्या-क्या कार्रवाई आतंकवाद है ।

2. आतंकवाद के कारण क्या हैं ? हम और आप इस अनुभव से गुज़रे हैं कि जब भी कोई महामारी या बीमारी छोटे या बड़े पैमाने पर फैलती है, तो हमारी सरकार का स्वास्थ्य विभाग इसके कारणों को जानने की कोशिश करता है कि आख़िर क्यों यह बीमारी फैल रही है ? अक्सर महामारी रोगों के फैलने का मुख्य कारण सफ़ाई का अभाव और गन्दगी का ढेर होता है । फिर स्वास्थ्य विभाग सबसे पहले शहर या उन क्षेत्रों की सफ़ाई की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करता है, ताकि उस महामारी पर क़ाबू पाया जा

सके । इसी तरह के मूल कारण आतंकवाद के महामारी का रूप धारण कर लेने में भी हैं । मैं तो देख रहा हूं और निस्संदेह आपके भी अवलोकन में होगा कि हर तरफ़ अन्याय और अत्याचार की गन्दगी फैली हुई है और उस पर आतंकवाद का मच्छर पल रहा है, लेकिन पूरी दुनिया के के लाल बुझक्कड़ केवल मच्छर को ख़त्म करने की ओर ध्यान दे रहे हैं, लेकिन इस अन्याय और अत्याचार की गन्दगी के ढेर को ख़त्म करने की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं ।

दुनिया के बड़े-बड़े चिंतक इस सिलसिले में इतने विवेकहीन सवाल उठाते हैं और ऐसी अत्याचार पूर्ण कार्रवाई का समर्थन करते हैं कि उनकी बुद्धि और उनकी सूझबूझ पर बेतहाशा हंसी आती है । कभी-कभी गुस्सा भी आता है कि अगर पेरिस पर किसी गिरोह ने फ़ायरिंग करके सौ-सवा सौ लोगों को मार डाला है, तो उसका बदला इस विवेकहीन कार्रवाई से लेते हैं कि सीरिया पर उनके लड़ाकू जेट विमानों द्वारा आई॰एस॰आई॰एस॰ के ठिकानों पर बमबारी की जाती है, जिसमें आम नागरिकों की मौत होती है । बताया जाए कि यह आतंकवाद को ख़त्म करने वाली कार्रवाई है या आतंकवाद के बढ़ावा देने वाली ।

यह रिपोर्ट तो इंटरनेट पर मौजूद है कि अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान के क़बाइली इलाक़ों में ड्रोन हमले, जिसके बारे में कहा जाता रहा है कि वे आतंकवादियों के अड्डों पर किये जा रहे हैं, लेकिन इसका शिकार आम नागरिक बने, जिनमें बड़ी संख्या बच्चों और महिलाओं की रही है । ड्रोन हमले का निशाना मस्जिदों, मदरसों, शादी-ब्याह के उत्सवों और क़ब्रिस्तान में किसी के जनाज़े में शामिल लोग भी बने । अभी तक आतंकवादी कार्रवाइयों का कारण प्रतिशोध की कार्रवाई ही अधिक रही है ।

यह रिपोर्ट तो इंटरनेट पर मौजूद है कि अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान के क़बाइली इलाक़ों में ड्रोन हमले, जिसके बारे में कहा जाता रहा है कि वे आतंकवादियों के अड्डों पर किये जा रहे हैं, लेकिन इसका शिकार आम नागरिक बने, जिनमें बड़ी संख्या बच्चों और महिलाओं की रही है । ड्रोन हमले का निशाना मस्जिदों, मदरसों, शादी-ब्याह के उत्सवों और क़ब्रिस्तान में किसी के जनाज़े में शामिल लोग भी बने । अभी तक आतंकवादी कार्रवाइयों का कारण प्रतिशोध की कार्रवाई ही अधिक रही है ।

ईमानदारी और अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर यह बताएं कि अगर किसी ख़ानदान का सब कुछ लुट गया हो उसके ख़ानदान के लोग उसके रिश्तेदार जिनसे वह उत्यधिक मुहब्बत करता है, उनको आराम पहुंचाने के लिए वह बड़ी से बड़ी मेहनत व कठिनाई से भी ख़ुशी के साथ गुज़र जाता है । अगर उसकी आंखों के सामने उनके ही रिश्तेदारों को बमों और गोलियों का निशाना बना दिया जाए, तो क्या उससे किसी अच्छे काम की उम्मीद की जानी चाहिए । मेरा अनुभव है कि आतंकवाद के कारणों में मुख्य कारण अन्याय और अत्याचार ही है । बिना इसके अंत के दुनिया को शांति व सलामती का गहवारा बनाना विवेकहीनों की जन्नत में रहने के बराबर है ।

3. आतंकवादी कार्रवाइयों में लिप्त संगठनों के मामले में संयुक्त राष्ट्र और अमेरिका की आतंकवादी संगठनों की सूची में दस प्रतिशत भी मुस्लिम नाम वाले संगठन नहीं हैं । हद तो यह है कि स्वयं भारत में आतंकवादी संगठनों की लिस्ट में बहुत कम संख्या मुस्लिम नाम वाले संगठन हैं, बाक़ी सब अन्य संगठन हैं, लेकिन बदनाम केवल मुस्लिम नाम वाले संगठनों को ही किया जाता है ।

देश की कई सत्ताधारी हस्तियों का क़त्ल हुआ, किसी में भी मुसलमान लिप्त नहीं है । सारे ही क़त्ल में अन्य लोग ही अपराधी पाये गये । इसके अलावा कई आतंकवादी कार्रवाइयों में मुसलमानों को लिप्त ठहराया गया, लेकिन अदालत में उनके ख़िलाफ़ अपराध साबित नहीं किया जा

सका, क्योंकि जिन लोगों को फंसाया गया था वे मासूम और निर्दोष, अपराधी कोई और है, जिसको बचाने की चेष्टा की जाती है ।

यह बताने की कदापि आवश्यकता नहीं कि ऐसे लोगों को पूर्व आई०जी० पुलिस महाराष्ट्र ने अपनी किताब 'हू किल्ड करकरे' में पर्दाफ़ाश किया है, लेकिन सत्ता में बैठे लोग उसको सिरे से बहस में ही नहीं लाते । क्या इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि आतंकवाद के नाम पर केवल मुसलमानों को निशाना बनाया जाता है और अस्ल आतंकवादियों की मदद की जाती है, इसलिए जैसा कि मैंने इससे पहले बिन्दु दो में आतंकवाद के कारण के संदर्भ में बात कही कि आतंकवाद के मामले में न्याय के स्तर को कठोरता के साथ लागू किया जाए । किसी को अनुचित तंग करना, उसको यातना पहुंचाना और किसी के अपराधों पर उसे संसद की सीट पेश करने से आतंकवाद में बृद्धि ही होगी ।

4. क्या मुस्लिम नाम वाले हर उस संगठन को आतंकवादी संगठन मान लेना चाहिए, जिसकी सूची यहूदी मीडिया पर यहूदियों के पंजे में गिरफ़्तार अमेरिकी साम्राज्य की ओर से जारी हो ? आतंकवाद पर चर्चा करते हुए या उसके कारणों व निवारणों पर रोशनी डालते हुए उक्त बिन्दु चार पर भी ध्यान देना होगा कि क्या हम उन सभी मुस्लिम संगठनों और मुस्लिम व्यक्तित्व को आतंकवादी मान लें, जिनकी सूची हमें यहूदी मीडिया पर यहूदियों के गुलाम अमेरिका की ओर से पेश की जाए ? क्या अपने देश की स्वतंत्रता और अत्याचारी शासकों के विरुद्ध लड़ना भी आतंकवाद के दायरे में आता है ? और अगर ऐसा है तो हमें सबसे पहले दुनिया के ऐसे लोगों की सूची फाड़ कर फेंक देनी होगी, जिन्होंने अपने-अपने वतन की आज़ादी के प्रयत्न में अपने ख़ून के नज़राने पेश किये ।

उन्हें भी नये अघोषित क़ानून के अनुसार आतंकवादियों की सूची में शामिल किया जाना चाहिए, जो सदियों से अपने देश की जनता के लिए नायक की हैसियत रखते हैं, जिनके लिए इस देश की जनता मान-सम्मान की भावना रखती है । क्या कोई हमसे भगत सिंह और अशफ़ाकुल्लाह ख़ान के प्रति हार्दिक भावना और उनके लिए मान-सम्मान को अलग कर सकता है ?

मैं यहां फ़िलिस्तीन की चर्चा करना ज़रूरी समझता हूं कि आज वहां के मुजाहिदीन को यहूदियों के ईमान पर ख़ुद देश की मीडिया में भी आतंकवादी कहा और लिखा जाता है । क्या मुझे कोई बताएगा कि फ़िलिस्तीनियों की भूमि पर इसराईल की बलात् उत्पत्ति आतंकवाद है या इस आतंकवाद के ख़िलाफ़ लड़ने वाले बम, बारूद, तोप और मिसाइल का जवाब ईंट-पत्थरों और गुलेल से देने वाले आतंकवादी हैं ?

ऐसा ही कुछ सीरिया और ईराक़ में भी हो रहा है कि अत्याचारी हुकूमतों के ख़िलाफ़ लड़ने वाली शक्तियों को आतंकवादी कहा जा रहा है । उन्हें बदनाम किया जा रहा है, ताकि दुनिया की सुपरपावरों का हित सुरक्षित रखा जा सके । आख़िर किसी देश की जनता को यह आज़ादी क्यों नहीं दी जा रही है कि वे स्वयं ही यह चुनाव करें कि वे अपने देश के लिए सरकारों का चुनाव ख़ुद ही करेंगे, बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के । दुनिया की किसी क़ौम को यह हक़ कब से और किसने दे दिया कि कोई देश अपने यहां किस ढंग की सरकार स्थापित करे और किस तरह की नहीं । वह कैसा क़ानून बनाए और कैसा नहीं, हमें यह देखना होगा कि किसी देश में कौन-कौन से जन-आन्दोलन हैं और वे क्या चाहते हैं और उनकी सच्चाई एवं उनकी वास्तविक जानकारी को जनता तक बेरोक-टोक पहुंचाने के काम को आसान बनाना बहुत ज़रूरी है ।

लेकिन हो यह रहा है कि जब ऐसा कोई संगठन कोई वेबसाइट बनाता है तो उसको ब्लाक किया जाता है और जब दुनिया की उन शक्तियों को जो मुसलमान, इस्लाम और मानवता के दुश्मन हैं, किसी देश के आन्दोलन को बदनाम करना होता है, तो एक अदद वेबसाइट भी बन जाती है और उस पर किसी पेरिस हमले की ज़िम्मेदारी क़बूल करने की पोस्ट भी आ जाती है । कोई पूछने वाला नहीं है कि इस संगठन की पिछली दस से अधिक वेबसाइटें ब्लाक कर दी गयीं, तो यह साइट कहां से आ गयी । यहां पर यह प्रमाणित होता है कि यह सब कुछ इंटेलीजेंस अपने देश और सैद्धांतिक हितों के मद्देनज़र ख़ुद ही बनाती है, इतिहास में ऐसे अनगिनत प्रमाण मौजूद हैं ।

इराक़ और सीरिया में जिस हस्तक्षेप करने वाले ग्रुप को ख़तरनाक आतंकी बनाकर पेश किया जा रहा है, आज कोई

यह सवाल नहीं उठा रहा है कि ऐसे ख़तरनाक आतंकवादियों ने केवल एक वर्ष पूर्व हमारे देश की नर्सों को मान-सम्मान के साथ क्यों भेज दिया ? मैं भी सोचता हूं और सारे लोगों को इस पर विचार करना चाहिए कि दुनिया में हो क्या रहा है और हमें दिखाने की क्या कोशिश की जा रही है । इसी संदर्भ में मैं एक बात यह भी कहना चाहूंगा कि मध्य-पूर्व की मौजूदा जंग या अशांति से देश का कुछ लेना-देना नहीं है । लेकिन दुनिया की कुछ शक्तियां ज़बरदस्ती भारत को भी इस अशांति का हिस्सा बनाना चाहती है, जिससे देश को बचाने की ज़िम्मेदारी हम सब की है कि आख़िर वह कौन-सी शक्ति है, जो देश को भी जंग की भट्ठी में झोंकना चाहती है, उसकी निशानदेही ज़रूरी है । मैं पिछले दो साल से देख रहा हूं कि मध्य-पूर्व की आग यहां भड़काने की कोशिश की जाती है ।

5. ख़बरों के माध्यम से आतंकवाद के संबंध में जिन मुस्लिम ग्रुपों को हमारे सामने पेश किया जाता है; हमें उन ख़बरों को ज्यों का त्यों सच मान लेना चाहिए ? वास्तव में बिन्दु चार की ही शृंखला है । मैं इससे पहले लिख चुका हूं कि हो कुछ रहा है और जो हो रहा है वह कर कोई और रहा है, लेकिन हमें कुछ और पेश किया जा रहा है । इसकी जांच-पड़ताल बहुत ज़रूरी है । अब जांच-पड़ताल कैसे करें इसकी कई सूरतें हैं ।

एक सूरत तो यह है कि जिस देश में कहीं कोई दंगा या इन्काउंटर होता है, तो उसकी जांच-पड़ताल के लिए एक फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बन जाती है, फिर वह अपनी रिपोर्ट मीडिया के सामने पेश करती है । इसी तरह ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था हमारे देश में भी हो, जिसमें सभी विचारधारा के विद्वान, बुद्धिजीवी और धर्म नेता हों, वे दुनिया में कहीं भी कुछ हो तो उसकी जांच-पड़ताल के लिए जाएं और घटना के हालात को अपनी आंखों से देखकर आएं और यहां जनता के सामने पेश करें ।

लेकिन फ़िलहाल यह सूरतेहाल ज़रा मुश्किल है, तो दूसरी सूरत यह है कि हम विभिन्न घटनाओं की कड़ियों को मिलाकर या विभिन्न रिपोर्टों या विभिन्न नेताओं के बयानों को मिलाकर पढ़ें, उस पर ग़ौर करें और फिर कोई परिणाम प्राप्त करें । इसके अलावा और कोई सूरत नहीं है । अगर ऐसा कुछ नहीं है तो खुदा के वास्ते ख़ामोश रहें और देखें कि भविष्य के परदे से क्या प्रकट होता है । कुरआन में है–

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आये तो छानबीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को बेख़बरी में हानि पहुंचा बैठो और फिर अपने किये पर तुम्हें पछतावा हो ।"

(कुरआन, 49:6)

## कविता

# ढर्रा

अपने यहां अब यह
एक ढर्रा ही बन गया है !
अच्छे पदासीन प्रतिष्ठित
सम्मानित व्यक्ति पहले तो
कुछ भी ऊल-जलूल अवांछित
अशोभनीय बोल जाते हैं
फिर उससे साफ़ मुकरते हैं
इलेक्ट्रानिक मीडिया के रहते
सफल नहीं हो पाते हैं
तो "मेरा वह आशय नहीं था
कहकर पल्ला छुड़ाने का
असफल प्रयास करते हैं
जान छूटती नहीं दीखती
तो थक हार कर बोलते हैं
मेरे शब्दों से यदि किसी की
भावनाओं को ठेस पहुंची हो तो..."
कहते-कहते बैठ जाते हैं
क्षमायाचना वह भी 'यदि' के साथ
वह भी आधी अधरी बेमन से ।

**ओमप्रकाश बजाज**
पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर

# कैसे रुके हिरासत में यातना ?

■ सुभाष गाताडे

पुलिस थानों और जेलों में सी॰सी॰टी॰वी॰ लगाने का मसला नये सिरे से सुर्ख़ियों में आया है । महाराष्ट्र हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को पिछले दिनों निर्देश दिया कि वह छह हफ़्तों के अंदर थानों में सी॰सी॰टी॰वी॰ लगाने का इंतिजाम करे । दरअस्ल, अदालत राज्य में हिरासत में मौतों को लेकर कई याचिकाओं की-जिनमें एक जनहित याचिका भी शामिल थी-सुनवाई कर रही थी । खुद सरकारी वकील ने अदालत को बताया कि हिरासत में मौतों की संख्या 2013 में 36 थी, 2014 में 39 थी और 2015 में बढ़कर 41 पर पहुंच गयी । इन आंकड़ों पर चिंता प्रकट करते हुए अदालत ने दोहराया कि डेढ़ साल पहले उसने सरकार को आदेश दिया था कि पुलिस थानों में सी॰सी॰टी॰वी॰ लगाए, मगर सरकार इसके प्रति गंभीर नहीं दिखती । न्यायमूर्ति कानडे की अध्यक्षता वाली पीठ का कहना था कि समस्या को सुलझाने की राजनीतिक इच्छाशक्ति हो तो राज्य सरकार इसे कर सकती है, मगर यह प्रतीत हो रहा है कि वह इस बात के प्रति गंभीर नहीं है ।

याद रहे कि मुश्किल से छह माह पहले सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति टी॰एस॰ ठाकुर की अगुआई वाली पीठ ने 'डी॰वेन बसु बनाम पश्चिम बंगाल सरकार' के नाम

**खुद सरकारी वकील ने अदालत को बताया कि हिरासत में मौतों की संख्या 2013 में 36 थी, 2014 में 39 थी और 2015 में बढ़कर 41 पर पहुंच गयी । इन आंकड़ों पर चिंता प्रकट करते हुए अदालत ने दोहराया कि डेढ़ साल पहले उसने सरकार को आदेश दिया था कि पुलिस थानों में सी॰सी॰टी॰वी॰ लगाए, मगर सरकार इसके प्रति गंभीर नहीं दिखती ।**



से जाने गये मामले में देश की हर जेल में अनिवार्यत: सी॰सी॰टी॰वी॰ कैमरे लगाने का आदेश दिया था ताकि न्यायिक और पुलिस हिरासत में मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोका जा सके । अदालत ने यह भी कहा था कि देश के तमाम पुलिस स्टेशनों पर बने लॉकअप में भी सी॰सी॰टी॰वी॰ लगाना वांछनीय होगा, अलबत्ता उसने इसके बारे में ठोस निर्णय लेने का जिम्मा पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों पर छोड़ा था । यह पूछा जाना समीचीन होगा कि आख़िर ऐसे क़दमों से हिरासत में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर क्या रोक लगाना मुमकिन है ?

अब जहां तक इस मामले में अन्य मुल्कों का अनुभव है तो वह निश्चय ही सकारात्मक कहा जा सकता है । वह इस बात को रेखांकित करता है कि जहां इससे पुलिस ज़्यादतियों पर अंकुश लग सकता है, वहीं यह भी स्पष्ट है कि पुलिस के ख़िलाफ़ ज़्यादती के नक़ली आरोपों से भी उनका बचाव हो सकता है क्योंकि वह सी॰सी॰टी॰वी॰ के रिकार्ड से छान कर अपनी बेगुनाही का सबूत दे सकती है ।

अभी कुछ समय पहले जब अग्नेलो वाल्दारिस नामक युवक की पुलिस थाने में मौत के मामले पर विचार करते हुए अदालत ने थाने के हर कोने में महाराष्ट्र सरकार को रोटेटिंग कैमरे अर्थात चल-कैमरे लगाने की सलाह दी थी और उसके कुछ समय पहले गुजरात उच्च न्यायालय ने भी गुजरात सरकार को इसी क़िस्म का निर्देश अन्य मामले में

दिया था और एक निश्चित सीमा तक उसे पूरा करने को कहा था, तब एक मानवाधिकार कार्यकर्ता ने इसकी चर्चा करते हुए लिखा था कि उनके मुताबिक़ वर्ष 2008 में कैटालोनिया के पुलिस थानों में सी॰सी॰टी॰वी॰ लगाए गये और तब से पुलिस ज़्यादतियों के ख़िलाफ़ आने वाली शिकायतों में चालीस फ़ीसद की कमी आयी । अमेरिका के कैलीफोर्निया के रियाल्टो शहर के एक अन्य अनुभव की भी उन्होंने चर्चा की थी, जिसमें पुलिसकर्मियों के शरीर पर ही कैमरे तैनात किये गये । लगभग एक लाख आबादी के इस शहर में संचालित इस नियंत्रित प्रयोग के अंतर्गत पुलिस के बल प्रयोग की घटनाओं में उनसठ फ़ीसद की कमी आयी और पुलिस के ख़िलाफ़ ज़्यादतियों की शिकायतों में नवासी फ़ीसद की कमी दर्ज की गयी ।

थानों और जेलों में सी॰सी॰टी॰वी॰ हों या पुलिस के शरीर पर कैमरे हों, इन दोनों के माध्यम से ऐसी घटनाओं पर निश्चय ही अंकुश लगाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, अमेरिका में पिछले साल रे टेन्सिंग नामक पुलिस अफ़सर को सैम्युअल डूबोस नामक तैंतालीस वर्षीय अफ़्रीक़ी-अमेरिकी व्यक्ति की हत्या करने के कारण हैमिल्टन कौन्टी के न्यायाधीश ने सज़ा सुनायी । बिना आगे वाले हिस्से के लाइसेंस प्लेट गाड़ी चला रहे डूबोस को टेन्सिंग ने रास्ते में रोक कर चालक का लाइसेंस मांगा और चूंकि उसके पास लाइसेंस नहीं था, इसलिए तैश में आकर टेन्सिंग ने अपनी पिस्तौल निकाल कर डूबोस पर गोली चला दी, जिससे उसकी वहीं मौत हो गयी । उन्नीस जुलाई को की गयी इस हत्या को लेकर टेन्सिंग ने पहले बहाने बनाने की कोशिश की, मगर उसके शरीर पर लगे वीडियो कैमरे के फुटेज से असलियत सामने आ गयी । न्यायाधीश ने दो टूक कहा कि यह हत्या है और टेन्सिंग को इस अपराध की सज़ा सुनायी।

उसके चंद रोज़ पहले अश्वेतों के अधिकारों के लिए संघर्षरत रही सांडरा ब्लांड नामक अश्वेत महिला की जेल में हुई मौत को लेकर जो विवाद खड़ा हुआ, उसमें भी यही तथ्य सामने आया कि किस तरह पुलिस ने उसे कार चलाते हुए रोका था और महज सड़क पर लेन ग़लत चुनने के चलते उसकी पिटाई की थी । इस मामले में भी सच्चाई उजागर होने में पुलिस के शरीर पर लगे वीडियो कैमरे के फुटेज से काफ़ी मदद मिली ।

ग़ौरतलब है कि 2011-12 में ही राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सामने ऐसे पंचानवे हज़ार मामले आये । हिरासत में मौतों को लेकर सर्वोच्च न्यायालय समय-समय पर हस्तक्षेप करता रहा है । भारत में मानवाधिकार उल्लंघन की बढ़ती घटनाओं के मद्देनज़र केन्द्र और राज्य सरकारों को वह लताड़ता रहा है कि पुलिस ज़्यादतियों को रोकने के लिए उसने 1996 में जो दिशा-निर्देश जारी किये थे, उन पर क्यों नहीं अमल हो रहा है । उदाहरण के तौर पर सर्वोच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति एच॰एस॰ बेदी और जे॰एम॰ पांचाल की पीठ ने शिमोगा शहर में बाईस साल पहले डोड्डापेट थाने के अंदर हुई गुरुमूर्ति और राजाकुमार की मौत के मामले में शेकरप्पा और छह अन्य कांस्टेबलों को ज़िम्मेदार ठहराया था । दोषी पुलिसकर्मियों की सज़ा को सही ठहराते हुए सुप्रीम कोर्ट ने दो बातें रेखांकित की थीं ।

**इसके अलावा अपराध दंड संहिता की धारा 176 के अंतर्गत, किसी भी अस्वाभाविक मौत को लेकर ज़िला प्रशासन के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह चौबीस घंटे के अन्दर न्यायिक जांच करे । इतना ही नहीं, हिरासत में मौत के मामले में शव परीक्षण भी चौबीस घंटे के अंदर कराये जाने का प्रावधान बनाया गया है । लेकिन तथ्य बताते हैं कि इन सभी नियमों का धड़ल्ले से उल्लंघन किया जाता है ।**

एक, हिरासत में हत्या निस्संदेह ऐसा घृणित अपराध है, जो नागरिकों के रक्षक कहे गये लोगों द्वारा किया जाता है । इनमें सबसे विचलित करने वाला पक्ष यही होता है कि पुलिसिया वर्दी और प्राधिकार का डर दिखाकर उन्हें पुलिस हिरासत में यातनाएं दी जाती हैं, जहां पीड़ित पूरी तरह असहाय होता है ।

दूसरे, नागरिकों की व्यक्तिगत आज़ादी और ज़िंदगी की हिफ़ाज़त करने के लिए भले ही संवैधानिक प्रावधान बने हों, मगर हक़ीक़त यही है कि पुलिस हिरासत में यातना और मौत की घटनाओं में लगातार इज़ाफ़ा हो रहा है । ऐसे मामलों की अदालतों द्वारा भर्त्सना किये जाने के बावजूद कुछ

पुलिस अधिकारी ऐसा व्यवहार करते हैं कि शक के आधार पर गिरफ़्तार किये गये लोगों को जान से हाथ धोना पड़ता है ।

इस स्थिति में सुधार के लिए विधि आयोग ने अहम सिफ़ारिशें की थीं । आयोग के मुताबिक़ (भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872) में उचित संशोधन की आवश्यकता है ताकि हिरासत में हुई मौत को लेकर अपने आपको बेगुनाह साबित करने की ज़िम्मेदारी पुलिस की हो । दूसरे, अपराध दंड संहिता की धारा 197 को रद्द करने की आवश्यकता है ताकि अदालत की वरीयता की रक्षा की जा सके । विधि आयोग की सिफ़ारिशों के अलावा पुलिस सुधार के लिए समय-समय पर बने आयोगों और समितियों ने भी कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये हैं । पर उनकी रिपोर्टें धूल खा रही हैं । आख़िर एक जनतांत्रिक व्यवस्था में पुलिस की कार्यप्रणाली ऐसी क्यों है कि आम लोग उसकी मौजूदगी से आश्वस्त होने के बजाय उससे भय खाते हैं । प्रश्न उठना लाज़िमी है कि हिरासत में यातना दिये जाने की घटनाओं में बढ़ोत्तरी के पीछे क्या वजहें हैं ।

दरअस्ल, यातना देने वाले को मालूम रहता है कि वह पूरी तरह सुरक्षित है, वह कुछ भी करे, सज़ा से बचा रह सकता है । खुद केन्द्र और राज्य सरकारें भी अपराध दंड संहिता की धारा 197 के अंतर्गत दोषी अधिकारियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने की मंज़ूरी नहीं देती हैं । ऐसा नहीं है कि इस तरह की मौतों को रोकने के लिए सरकार ने नीतियां नहीं बनायी हैं । राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने हिरासत में मौतों को लेकर अपने स्पष्ट दिशा-निर्देश तय किये हैं । इनमें ऐसी घटनाओं की सूचना चौबीस घंटे के भीतर पहुंचाने में, इस बात की पड़ताल करते हुए कि कहीं पुलिस या सरकारी अधिकारी ने कोई गड़बड़ी तो नहीं की है, इसे भी जांचने के दिशा-निर्देश दिये हैं ।

इसके अलावा अपराध दंड संहिता की धारा 176 के अंतर्गत, किसी भी अस्वाभाविक मौत को लेकर ज़िला प्रशासन के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह चौबीस घंटे के अन्दर न्यायिक जांच करे । इतना ही नहीं, हिरासत में मौत के मामले में शव परीक्षण भी चौबीस घंटे के अंदर कराये जाने का प्रावधान बनाया गया है । लेकिन तथ्य बताते हैं कि इन सभी नियमों का धड़ल्ले से उल्लंघन किया जाता है । सबसे बड़ा सवाल है कि सरकारें जनता की बेहतरी के प्रति कितनी गंभीर होती हैं । कुछ साल पहले संसद में हीरेन मुखर्जी स्मारक व्याख्यान देते हुए नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रोफ़ेसर अमर्त्य सेन ने एक अहम बात कही थी, जिस पर हर सरकार को ग़ौर करना ही चाहिए । उनका कहना था कि 'सामाजिक न्याय के विचार की पड़ताल करते हुए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम न्याय के प्रणाली-केन्द्रित नज़रिए और नतीजा केन्द्रित नज़रिए में फ़र्क़ करें । अक्सर हम न्याय को कुछ सांगठनिक प्रणालियों के संदर्भ में सोचते हैं–कुछ संस्थाएं, कुछ नियमन, कुछ व्यवहारगत नियम–जिनकी सक्रिय मौजूदगी हमें बताती है कि न्याय को अमल में लाया जा रहा है । सवाल यह है कि क्या न्याय की मांग महज संस्थाओं के गठन तथा नियमों के निर्धारण तक सीमित रखी जा सकती है ।' (सा॰ : जनसत्ता)



طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ لظی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہاویہ۔


# قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

## قادری قبض روجن

گیسٹک کے درد میں؟

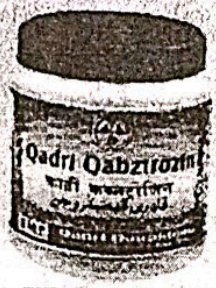


بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

## زعفرانی تیل

گٹھیا کے درد میں؟




کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

## پشٹک چورن




جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

## ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا




مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

## کیسر فورٹ

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



اگر مردانی قوت میں کمزوری آ جائے تو اس کے شکار مرد ہیں اور اگر وہ جسمانی ورزش کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو کمزوری کہتے ہیں۔ ان کی تکالیف کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے تحقیق کرنے کے بعد جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

## زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے

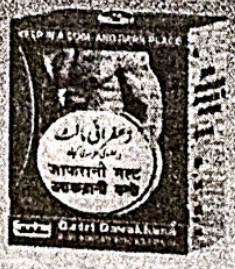


دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا ممسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

**Qadri Dawakhana** ™
B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooquie Road (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph No 2469-3173-2489-3539 (M) 9830009616 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST

**Qadimi Dawakhana**
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

**M/s. Shifa Clinic**
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur, Shaheed Nagar
Ghaziabad, Ph. : 0120 - 2621280

# हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन और शिक्षा पर दो पुस्तकें

● मुहम्मद इलियास हुसैन

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की ज़िन्दगी और उनके कारनामों पर दो किताबों में 'इस्लाम के पैग़म्बर : मुहम्मद (सल्ल॰)' और 'प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी' के लेखकों ने अपने-अपने अन्दाज़ में प्रकाश डाला है। पहली किताब में प्रोफ़ेसर के॰ एस॰ रामाकृष्णा राव ने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के बहुआयामी व्यक्तित्व पर या यूं कहें कि सार्वजनिक जीवन पर और दूसरी किताब में विद्वान लेखक एजाज़ुल हक़ कुद्दूसी ने पैग़म्बर (सल्ल॰) निजी ज़िन्दगी पर लेखनी चलायी है और क्या ख़ूब चलायी है। आइये, दोनों किताबों पर बारी-बारी नज़र डालते हैं–

**'इस्लाम के पैग़म्बर : मुहम्मद (सल्ल॰)'** शीर्षक पुस्तक में विद्वान लेखक प्रोफ़ेसर के॰ एस॰ रामाकृष्णा राव ने अंतिम ईशदूत मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बहुआयामी व्यक्तित्व पर भरपूर प्रकाश डाला है। आप (सल्ल॰) महान पैग़म्बर, सम्मोहक उपदेशक, कुशल वक्ता, ईमानदारी व्यापरी, समाज-सुधारक, कुशल शासक, यतीमों के पोषक, गुलामों के रक्षक, नारी-जाति के उद्धारक, आदर्श न्यायकर्ता, मानव-एकता एवं समानता के प्रतिष्ठापक, दार्शनिक, युद्ध के मैदान में भी मानव-मूल्य का सतत् ध्यान रखनेवाले सेनानायक, दार्शनिक और सन्त सब कुछ थे। प्रोफ़ेसर राव ने इस पुस्तक के पहले अध्याय में मुहम्मद (सल्ल॰) के ऐतिहासिक व्यक्तित्व, दूसरे में आप (सल्ल॰) को सम्पूर्ण संसार के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ, तीसरे में विश्वसनीय व्यक्तितव, चौथे में सत्यवादी, पांचवें सम्पूर्ण संसार के लिए एक अनुपम विरासत और छठे में एक ईशदूत के रूप में वर्णन किया है।

मुहम्मद (सल्ल॰) का जन्म अरब के रेगिस्तान में मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार 20 अप्रैल, 571 ई॰ में हुआ। जब आप (सल्ल॰) पैदा हुए। अरब उपमहाद्वीप केवल एक सूना रेगिस्तान था। मुहम्मद (सल्ल॰) की सशक्त आत्म ने इस सूने रेगिस्तान से एक नए संसार का निर्माण किया, एक नए जीवन का, एक नई संस्कृति और नई सभ्यता का। आप (सल्ल॰) के द्वारा एक ऐसे राज्य की स्थापना हुई, मराकश से लेकर इंडीज़ तक फैला जिसने तीन महाद्वीपों–एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप के विचार और जीवन पर अपना अभूतपूर्व प्रभाव डाला। यह शत-प्रतिशत सच है कि इस्लाम धर्म ऐतिहासिक धर्म है और इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का व्यक्तित्व भी पूरी तरह ऐतिहासिक है। आप (सल्ल॰) एक अकेले ऐसे महापुरुष हैं, जिनके जीवन की एक-एक घटना को बड़ी सावधानी के साथ बिल्कुल शुद्ध रूप में बारीक से बारीक विवरण के साथ आनेवाली नस्लों के लिए सुरक्षित कर लिया गया है। आप (सल्ल॰) का जीवन और कारनामे रहस्य के परदों में छिपे हुए नहीं हैं। सब कुछ इतिहास के आईने में बिल्कुल साफ़-साफ़ देखा-परखा जा सकता है।

आप (सल्ल॰) ने इस्लाम को सत्यधर्म के रूप में पेश किया और अपनी कथनी-करनी के द्वारा यह प्रमाणित कर दिखाया कि इस्लाम एक मानवतापूर्ण, समतावादी, कल्याणकारी और सर्वांगपूर्ण ईश्वरीय जीवन-व्यवस्था है। यह दुनिया भर के हर इन्सान का धर्म है। इसपर किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष का एकाधिकार नहीं है –'इस्लाम सबके लिए, मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) सबके लिए

| | |
|---|---|
| 1. पुस्तक: | इस्लाम के पैग़म्बर : मुहम्मद (सल्ल॰) |
| लेखक | : प्रोफ़ेसर के॰ एस॰ रामाकृष्णा राव |
| पृष्ठ | : 40 किफ़ायती संस्करण : 4.00 |
| प्रकाशक | : मधुर सन्देश संगम, नई दिल्ली-110025 |
| मोबाइल | : 09212356332, 09212117559 |

और कुरआन सबके लिए ।' इस्लाम और कुरआन में मौजूद है समस्त इन्सानी समस्याओं का समुचित समधान ।

आप (सल्ल॰) की कथनी और करनी में पूरी तरह समानता थी, जो कहते थे, वह करके दिखाते थे । आप (सल्ल॰) का व्यक्तित्व दुनिया भर के हर इन्सान के लिए आदर्श और अनुकरणीय है । आप द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चलकर ही इस्लाम की शीतल छाया तले दुनिया शान्ति और सलामती के पालने में ज़िन्दगी गुज़ार सकती है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रोफ़ेसर राव ने अपनी कुशल लेखन-शैली और कड़ी मेहनत के बल पर अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बहुआयामी व्यक्तित्व और कारनामों को समेटकर मानो 'गागर में सागर' भर दिया है । यह पुस्तक हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में आप (सल्ल॰) की सर्वाधिक चर्चित जीवनियों में से एक है । पुस्तक की वर्णन-शैली मन को लुभानेवाली और भाषा प्रवाहमयी है ।

2. पुस्तक : **प्यारे नबी ( सल्ल॰ ) की पाक ज़िन्दगी**
लेखक : एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी
पृष्ठ : 80 किफ़ायती संस्करण : 8.00
प्रकाशक : मधुर सन्देश संगम, नई दिल्ली-110025
मोबाइल : 09212356332, 09212117559

2. **'प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी'** नामक पुस्तक में लेखक ने पैग़म्बर की निजी ज़िन्दगी के विभिन्न पहलुओं पर रौशनी डाली है और आप (सल्ल॰) की शिक्षाओं को पेश किया है । आज का समाज अपने अधिकारों को पहचानने वाला और दूसरों के अधिकारों की उपेक्षा करने वाला बनकर रह गया है । कई मामलों में तो दूसरों का अधिकार छीनना और दूसरों को प्रताड़ित करना अपना अधिकार समझने लगा है । आज एक इन्सान के द्वारा दूसरे इन्सान पर जो अत्याचार और अन्याय किए जा रहे हैं, अपमान का जो ज़हर पिलाया जा रहा है, वह नबी (सल्ल॰) की शिक्षा के बिल्कुल प्रतिकूल है ।

प्यारे नबी (सल्ल॰) की पाक ज़िन्दगी से हमें शिक्षा और रहनुमाई हासिल करनी चाहिए कि एक अच्छे इन्सान को अपनी ज़िन्दगी कैसे गुज़ारनी चाहिए । अपने मां-बाप, अपनी बच्चों, अपने पड़ोसियों और पूरी मानव-जाति का कितना और कैसे ख़्याल रखना चाहिए । समाज में एक आदर्श नागरिक बनकर कैसे रहना चाहिए । आप (सल्ल॰) रहमते-आलम बनकर आये थे यानी पूरी दुनिया के लिए साक्षात् दयालुता थे । पूरी मानवता की भलाई, सबका कल्याण आपके जीवन का मूलमंत्र था ।

एक बार एक आदमी ने प्यारे नबी (सल्ल॰) से पूछा कि बीवी का हक़ उसके शौहर पर क्या है, तो आप (सल्ल॰) ने जवाब में कहा कि जब ख़ुद खाये, तो उसको खिलाये, जब ख़ुद पहने, उसको पहनाये । न उसके मुंह पर थप्पड़ मारे, न उसको बुरा-भला कहे । (पृ॰ 63)

अपनी बीवियों के लिए सबसे बेहतर कौन है ? सवाल में जवाब में आपने कहा कि तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपनी बीवियों के लिए सबसे बेहतर है और मैं तुममें सबसे ज़्यादा अपनी बीवियों के लिए बेहतर हूं ।

एक बार बच्चों के अधिकारों की चर्चा करते हुए आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : कोई बाप अपने बच्चे को इससे बेहतर तोहफ़ा नहीं दे सकता कि वह उसको अच्छी शिक्षा दे ।

मां-बाप के अधिकार भी ब़च्चों पर हैं । इसलिए मां-बाप का ख़्याल रखना बच्चों का कर्तव्य है । आप (सल्ल॰) एक मस्जिद में विराजमान थे । वहां सहाबा (रज़ि॰) भी मौजूद थे ।

आप (सल्ल॰) फ़रमाया : वह ज़लील हुआ, वह ज़लील हुआ, वह ज़लील हुआ । सहाबा ने पूछा : कौन, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! फ़रमाया : जिसने अपने मां-बाप को या उनमें से किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पाया और फिर (उसकी ख़िदमत करके) जन्नत न हासिल कर ली ।

यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि आज दुनिया भर में पड़ोसियों के सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे हैं, बद से बदतर होते जा रहे हैं । हमारे राजनीतिज्ञों ने राजनीति की रोटी सेंकने के लिए इस सम्बन्ध को ख़राब करने में अहम भूमिका निभाई है । यह नबी (सल्ल॰) की शिक्षा के ख़िलाफ़ आचरण है । पड़ोसियों के सम्बन्धों को बिगाड़नेवाला सच्चा-पक्का मुसलमान नहीं हो सकता । प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया: ख़ुदा की क़सम, वह मोमिन नहीं हो सकता; ख़ुदा की क़सम, वह मोमिन नहीं हो सकता; ख़ुदा की क़सम, वह मोमिन नहीं हो सकता । सहाबा ने एक स्वर में पूछा : कौन, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ।

आप (सल्ल॰) ने बताया : वह जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से सुरक्षित न रहे ।

# सालोदिया इस्लाम की गोद में

■ फ़िरोज़ ख़ान

राजस्थान सरकार में तैनात सीनियर आई॰ए॰एस॰ अधिकारी उमराव सालोदिया ने सनातन हिन्दू धर्म त्यागकर सत्य मार्ग इस्लाम को क़बलू कर राजस्थान ही नहीं देशभर में धमाका कर दिया । जानकारी में आया है कि जनाब उमराव ख़ान साहब काफ़ी लंबे समय से इस्लाम का अध्ययन कर रहे थे । इस्लाम के अध्ययन के बाद उन्होंने पाया कि पूर्व ध र्म के मुक़ाबले इस्लामी तालीमात साफ़-सुथरी, सीधी, व्यावहारिक, मानवतावादी व तर्कशील है । सालोदिया ख़ान साहब हिन्दू धर्म में व्याप्त जाति व्यवस्था, छुआछूत, ऊंच-नीच, सैकड़ों भगवानों की व्यवस्था में संतुष्ट नहीं थे ।

सालोदिया ने इसका ज़िक्र प्रेसवार्ता में भी किया था कि इस्लाम में कोई छोटा-बड़ा नहीं है । सभी इन्सान एक समान हैं, सभी एक ईश्वर को मानते हैं । सालोदिया ने इस्लाम धर्म क़बूल करते समय पत्रकारों को यह भी बताया कि दलित होने के कारण उनके साथ और सभी दलितों के साथ भेदभाव होता है ।

राजस्थान प्रदेश के इस वरिष्ठ अधिकारी ने समाज एवं सरकार के डर को नज़रअंदाज़ करते हुए खुलकर कहा कि मुझे दलित होने के कारण मुख्य सचिव नहीं बनाया । कोई भी दलित अधिकारी उस पर हो रहे अन्याय के विरोध में खुलकर नहीं बोलता है । दलित अधिकारी, नेता एवं दलित जनता अन्याय सहती रहती है । अन्याय और अत्याचारों के विरोध में बोलने की हिम्मत सालोदिया में इस्लाम के अध्ययन के बाद ही आयी । सालोदिया के सरकार के बोलने के बाद दूसरे दलित भाइयों में भी अन्याय के विरोध में आवाज़ उठाने की हिम्मत देखने को मिल रही है । स्वतंत्रता के 65 वर्षों में पहली बार देखने को मिल रहा है कि दलित संगठन सरकार और उन पर हो रहे अत्याचारों के विरोध में खुलकर बोल रहे हैं । दलितों में वर्तमान में जो निडरता की भावना दिखायी दे रही है उसमें सालोदिया ख़ान साहब का बड़ा योगदान है । मुसलमान सिर्फ़ खुदा से डरता है और वह अन्याय और अत्याचारों से डटकर मुक़ाबला करता है । सालोदिया साहब भी सरकार और किसी लालच से डरे नहीं, उन्होंने खुलकर अपनी बात मीडिया के सामने रखी । यही था उन पर इस्लाम का प्रभाव ।

दूसरी तरफ़ इस्लाम ने इस सारे ब्रह्माण्ड में मानव को सर्वश्रेष्ठ स्थान पर रखा है । ब्रह्माण्ड (कायनात) में सभी जीव-निर्जीवों को पैदा करने वाले एक अल्लाह ने अपने फ़रमानों के पुंज कुरआन में कहा है कि सारे इन्सान एक मां-बाप की औलाद हैं । अतः सारे मानव भाई-भाई हैं । श्रेष्ठ उत्पत्ति होने के कारण ही अल्लाह ने मानव को ज़मीन में अपना प्रतिनिधि बनाया है । इस्लाम ने जन्म या जाति के आधार पर किसी को श्रेष्ठता नहीं प्रदान की है ।

इस्लाम की शिक्षाओं का अध्ययन जब कोई भी विवेकशील आदमी करता है तो वह इन तालीमात से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । उमराव साहब ने ज़रूर अपने पूर्व धर्म सनातन धर्म व अपने ग्रहण किये नवीन धर्म इस्लाम का अध्ययन खुले दिल से किया होगा और अंततः वह सत्य मानव धर्म को स्वीकार करने को बाध्य हो गये ।

उनका इस्लाम स्वीकारना उन इस्लाम विरोधियों को करारा जवाब है जो रात-दिन दुष्प्रचार करते थकते नहीं कि इस्लाम पूर्व में तलवार के ज़ोर से फैला । आज दुनिया के सिरमौर सर्व शक्तिशाली बने अमेरिका में 9/11 की घटना के बाद क़रीब 70 हज़ार लोग इस्लाम क़बूल कर चुके हैं । चीन के 2000 इंजीनियर जो खाड़ी देशों में विभिन्न योजनाओं में कार्यरत थे इस्लाम ला चुके हैं । इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी व स्वीडन में बड़ी तादाद में लोग इस्लाम स्वीकार कर चुके हैं और कर रहे हैं ।

इस्लाम में जन्म, जाति, नस्ल, रंग, धन व राष्ट्र के आधार पर कोई व्यक्ति श्रेष्ठ नहीं होता बल्कि श्रेष्ठ आदमी उसे बताया गया है जो अल्लाह पर ईमान लाने वाला व उससे डरकर जीवन व्यतीत करने वाला है । हज़रत बिलाल मक्का के कुरैश सरदार के गुलाम थे । उनके साथ इन्तिहाई घृणास्पद सुलूक होता था, लेकिन इस्लाम स्वीकार करते हैं तो मुसलमानों का प्रिय पत्र बन जाते हैं ।

# हमारी पाठ्य पुस्तकें

| | | | |
|---|---|---|---|
| आसान कहानियाँ | अफ़ज़ल हुसैन | | 10.00 |
| अख़लाक़ी कहानियाँ – 1 | अफ़ज़ल हुसैन | | 10.00 |
| अख़लाक़ी कहानियाँ – 2 | अफ़ज़ल हुसैन | | 10.00 |
| अख़लाक़ी कहानियाँ – 3 | अफ़ज़ल हुसैन | | 12.00 |
| अख़लाक़ी कहानियाँ – 4 | अफ़ज़ल हुसैन | [set 44.00] | 12.00 |
| क़ुरआन की बातें – 1(बच्चों के लिए) | सय्यद नज़र ज़ैदी | | 20.00 |
| क़ुरआन की बातें – 2(बच्चों के लिए) | सय्यद नज़र ज़ैदी | [set 38.00] | 18.00 |
| नेक औरतें – 1 | मतीन तरिक़ बाग़पती | | 15.00 |
| नेक औरतें – 2 | मतीन तरिक़ बाग़पती | [set 27.00] | 12.00 |
| नवीन सरल गणित – 1 | सम्पादन समिति | | 30.00 |
| नवीन सरल गणित – 2 | सम्पादन समिति | | 35.00 |
| नवीन सरल गणित – 3 | सम्पादन समिति | | 50.00 |
| नवीन सरल गणित – 4 | सम्पादन समिति | | 50.00 |
| नवीन सरल गणित – 5 | सम्पादन समिति | [set 279.00] | 114.00 |
| प्यारे रसूल (सल्ल0) | अफ़ज़ल हुसैन | | 14.00 |
| सामान्य ज्ञान (भाग – 1) | अफ़ज़ल हुसैन | | 08.00 |
| सामान्य ज्ञान (भाग – 2) | अफ़ज़ल हुसैन | [set 18.00] | 10.00 |
| सच्चा दीन (पहला भाग) | अफ़ज़ल हुसैन | | 55.00 |
| सच्चा दीन (दूसरा भाग) | अफ़ज़ल हुसैन | | 60.00 |
| सच्चा दीन (तीसरा भाग) | मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही | | 75.00 |
| सच्चा दीन (चौथा भाग) | मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही | | 80.00 |


**MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS**

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

# वार्तालाप

अब्दुल बारी 'साकी'
(अररिया, बिहार)

रविवार का दिन था, रहमान और श्याम एक-दूसरे के पड़ोसी थे, दोनों एक हरे-भरे घास के मैदान पर बैठकर वार्तालाप कर रहे थे । सर्वप्रथम रहमान बोले, "केन्द्र की वाजपेयी सरकार शिक्षा के भगवाकरण का संकल्प ले चुकी है । बल्कि इसके लिए केन्द्र राज्य सरकारों को बहुत जल्द आवश्यक निर्देश देने वाली है । क्या शिक्षा का भगवाकरण भारत जैसे विशाल देश का कल्याण संभव है ? क्या भारत की एक सौ करोड़ की आबादी इसे बर्दास्त कर सकेगी ? शिक्षा जो किसी क़ौम या समुदाय के विकास की रीढ़ है, इसे भगवाकरण करने में आख़िर वाजपेयी सरकार की मंशा क्या है ? रहमान ने श्याम से प्रश्न किया तो श्याम ने उत्तर दिया "देखा यार, अटल बिहारी वाजपेयी वर्तमान समय में केवल भाजपा के ही नेता नहीं हैं, बल्कि वह राजग गठबंधन के नेता हैं । 'मुझे तो विश्वास नहीं है कि अटल बिहारी वाजपेयी को इस घिनावने कृत्य हेतु उनसे जुड़े अन्य सहयोगी पार्टियां उनका समर्थन करेगी" श्याम बोले, भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जिसमें विभिन्न जाति के लोग रहते हैं । वे भिन्न-भिन्न बोलियां बोलते हैं ।

उनकी अपनी अलग-अलग संस्कृतियां हैं । फिर भी केन्द्र की भाजपा सरकार वोट बटोरने के लिए नये-नये आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल कर रही है । कभी बाबरी मस्जिद राम जन्मभूमि का मुद्दा तो कभी शिक्षा का साम्प्रदायिककरण" रहमान ने पुनः श्याम से प्रश्न किया, कि आख़िर शिक्षा को एक पक्षीयकरण करने के पीछे सरकार का उद्देश्य क्या है ? श्याम ने पुनः उत्तर दिया कि "इस देश के राजनेता स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर यानी 1947 से आज तक चाहे वह किसी राजनीतिक पार्टी की सरकार हो ।

प्रधानमंत्री के रूप में जो भी निर्णय लिये उसमें उसकी मंशा वोट बटोरने की रही, न कि जनहित में । सच मानो रहमान, लोकतंत्र या प्रजातंत्र यानी संसदीय प्रणाली में जनता को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने नेता का चुनाव स्वयं करें । इस प्रणाली में जितनी विशेषताएं हैं, उससे कहीं अधिक अवगुण भी पाये जाते हैं । उदाहरण के तौर पर तमिलनाडु में जयललिता जो अन्ना डी॰एम॰के॰ की नेत्री हैं, उन पर कई बड़े-बड़े घोटाले का आरोप है । लेकिन फिर भी तमिलनाडु की जनता ने जयललिता की पार्टी को मतदान द्वारा दो तिहाई से अधिक सीटें देकर उन्हें मुख्यमंत्री पद पर सुशोभित किया । यही लोकतंत्रीय संसदीय प्रणाली का दोष है । जनता जिसे चाहती है आसमान पर पहुंचा देती है और जिसे नकार देता है उसे आकाश से पाताल में भेज देती है । चाहे कतिपय नेताओं की छवि कैसी ही क्यों न हो । हालांकि माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक फ़ैसले में जयललिता की नियुक्ति को अवैध घोषित कर दिया । जिसके पश्चात उन्हें त्याग पत्र भी देना पड़ा । रहमान ने श्याम से पूछा, मित्र एक बात बताओ भारत जो 1947 से पूर्व एक अति विशाल देश था, जब यहां अंग्रेज़ शासन किया करते थे । भारत के वीर जवानों ने एक लंबी लड़ाई लड़ी और अंग्रेज़ों को यहां से बोरिया-बिस्तर समेट कर भागना पड़ा । लेकिन उसने जाते-जाते एक जिगर के दो टुकड़े यानी भारत और पाकिस्तान को दो भागों में विभाजित कर चले गये । अतः आज़ादी के बाद दो स्वतंत्र देश अस्तित्व में आये । दोनों देश की अपनी-अपनी अलग-अलग सरकारें हैं । अलग-अलग नीतियां हैं । फिर भी कश्मीर को लेकर दोनों देशों के बीच कटुता बनी रहती है । यह तो एक देश से दूसरे देश का मामला है । लेकिन हम विभिन्न धर्मों

**For Information On**
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
**Syed Shahbaz Alam Barvi**
Business Development Director (09049185093)
**Visit us:**
www.shoppinglanes.com

के मानने वाले भारतवासी जो यहीं जन्मे हैं और यही मरेंगे । यह सर्वविदित है कि इस देश के सभी नागरिक समान हैं । चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम, सिख हो या ईसाई एवं अन्य । फिर भी कभी हिन्दू बनाम मुस्लिम, कभी हिन्दू बनाम ईसाई दंगे हुआ करते हैं । गत वर्ष उड़िसा में ईसाई मिशनरी एवं उसके दो बच्चों की निर्मम हत्या को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है । जबकि हिन्दू मुस्लिम दंगों के अनेकों उदाहरण मौजूद हैं । इस देश में प्रतिदिन साम्प्रदायिक सौहार्द एवं आपसी भाईचारा बनाए रखने हेतु पाठ पढ़ाया जाता है । इसके लिए क़समें खायी जाती है । लेकिन इसके बावजूद ठीक इसके विपरीत यहां प्रतिदिन लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाई जाती है ।

ऐसा क्यों, रहमान ने पुनः एक बार श्याम से प्रश्न किया, "दरअस्ल भारत का क़ानन कठोर कम लचीला अधिक है । इसमें कुछ दोष क़ानून निर्माताओं का भी है । उदाहरणस्वरूप एक दशक से भी अधिक समय से इलाहाबाद हाईकोर्ट में बाबरी मस्जिद का मामला लंबित है । कोर्ट इसके फ़ैसले सुनाने में काफ़ी देरी कर रही है । जबकि इसी अदालत में कुछ वर्षों पूर्व समाजवादी, कांग्रेस तथा अन्य धर्मनिरपेक्ष दलों के सहयोग से बनी जगदम्बिका पाल की सरकार को केवल 24 घंटे में अवैध घोषित कर दिया गया था । जिसके फलस्वरूप जगदम्बिका पाल को त्याग पत्र देना पड़ा ।

सत्ता हथियाने के लिए जब कई राजनीतिक दलों में महाभारत छिड़ जाती है तो आम नागरिक की निगाहें अदालत पर टिक जाती है । लेकिन कभी-कभी अदालत का फ़ैसला ऐसा अजूबा होता है कि कोई भ अक़लमंद आदमी उसे स्वीकार नहीं कर सकता । कभी-कभी तो लोगों का अदालत से भी विश्वास समाप्त हो जाता है । तुम ठीक कहते हो, श्याम "आज देश में चाहे वह पदाधिकारी हो या नेता क़ानून से खिलवाड़ करते देखे जाते हैं ।

इसका एक नासुर सच यह भी है कि उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने बाबरी मस्जिद की रक्षा हेतु क़सम खायी थी, लेकिन उन्हीं के शासनकाल में बाबरी मस्जिद को कारसेवकों द्वारा बेदर्दी से तोड़कर गिराया गया । यह क़ानून से मज़ाक़ नहीं तो और क्या है ? श्याम ने कहा कि, "भारत विश्व में राष्ट्रपिता गांधी जी के नाम से जाना जाता है । गांधी जी ने जो आदर्श भारत का सपना देखा था पता नहीं उनका सपना कब साकार होगा । शायद होगा भी या नहीं" कितनी अफ़सोस की बात है कि आज भी कई जगहों पर जैसे–पिछले लोकसभा चुनाव में अररिया ज़िले का एक विधानसभा क्षेत्र रानीगंज में दलितों को पीट-पीटकर मतदान केन्द्रों से भगाया गया । उन्हें वोट डालने से वंचित कर दिया गया । इन लोगों ने ज़िला निर्वाचन पदाधिकारी को लिखित शिकायत दी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई ।" श्याम अब चलो यहां से क्योंकि नमाज़ का वक़्त हो चुका है । अज़ान होने वाली है । दोनों मित्र लंबी वार्ता को विराम देकर एक साथ वहां से चल पड़े ।

## कविता

# लिंग भेद

बचपन से ही हम स्वयं
बच्चों में लिंग भेद का
बीजारोपण कर देते हैं !
तू लड़की है तू लड़की है
रात-दिन कहते रहते हैं ।
आयु में छोटा भाई अक्सर
बड़ी बहन को पीट देता है
उसके हिस्से की वस्तु भी
ज़बरदस्ती उससे छीन लेता है ।
पुत्रमोह में ग्रस्त मां हमेशा
बेटे का ही पक्ष लेती रहती है
तेरा छोटा भाई है कह-कहकर
बेटी को दिलासा देती रहती है !
धीरे-धीरे यह सोच बेटे में दृढ़
और बलवती होती जाती है ।
और आज की उनकी सारी
उच्छृंखलता का आधार बन जाती है !

**ओमप्रकाश बजाज**
पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर (म०प्र०)

# कैसे करें सकारात्मक व्यक्तित्व का निर्माण?

● घेवरचंद श्रीश्रीमाल

यह सर्वविदित ही है कि व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से ही होती है और व्यक्तित्व का प्रभाव उसके आचरण पर पड़ता है । हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सुधारने का पूर्ण प्रयत्न करता है परन्तु कुछ को इसमें सफलता मिलती है तो कुछ को नहीं । व्यक्तित्व वे निर्माण में शिक्षा, धर्म, परिवार व समाज का योगदान महत्वपूर्ण है । आजकल इस विषय पर बहुत अधिक साहित्य उपलब्ध है । किसी भ व्यक्ति के अच्छे व्यक्तित्व का प्रभाव व्यापार एवं उद्योग धंधे पर सकारात्मक पड़ता है । सामान्यत: हमारे दैनिक कार्यक्रम में आपस में विचार-विमर्श, सकारात्मक दृष्टिकोण, आलोचना करना तथा आलोचना सुनना प्रमुख है ।

इस लेख के ज़रिये इसी संबंध में पढ़ी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों से प्राप्त हुए कुछ अच्छे अनुभव बांट रहे हैं ।

सबसे पहले हम 'आपस में विचा-विमर्श' पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे । हमें किस प्रकार परस्पर विचार-विमर्श करना चाहिए, इस संबंध में प्रमुख बिन्दुओं को हम यहां रपख रहे हैं ताकि हर व्यक्ति अपने बातचीत के तौर-तरीक़ों पर नज़र डालकर इससे तुलना कर सके कि उसका बातचीत करने का ढंग सही है या नहीं ? या फिर इसमें कुछ सुधार की आवश्यकता तो नहीं है । मेरा ऐसा विश्वास है कि अगर आप निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देकर उनका अनुसरण करने की कोशिश करेंगे तो हर स्थिति में सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे ।

● कोई भी बात करने से पूर्व हमें किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रेसित नहीं होना चाहिए । जैसे, वह मेरा मित्र है या मेरा विरोधी, सोचना ठीक नहीं है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर बात करने से विरोधी भी आपकी बात सुनने का प्रयास अवश्य करेगा और वह सोचने के लिए अवश्य मजबूर होगा ।

● हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम विषय को लंबा न खींचें । अगर किसी बिन्दु पर मतभेद कम नहीं होते हैं तो उस समय उस विषय को टाल देना चाहिए और आगे के समय का इन्तिज़ार करना चाहिए ।

● आप दूसरों के विचारों को शांति से सुनिए । उसे भी ऐसा एहसास होना चाहिए कि उसकी बात सुनी जा रही है । इसके बाद ही आपको अपने विचार प्रकट करने चाहिए ।

● बातचीत के दौरान कुछ स्पष्टीकरण के लिए आप प्रश्न पूछ सकते हैं, जिससे सामने वाले को भी एहसास होगा कि आप उसकी बात ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं और आपको उसके विचारों को सुनने का पूरा मौक़ा मिलेगा ।

● किसी भी बात को अधिक बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहना चाहिए बल्कि सत्यतापूर्वक बात को रखना चाहिए ताकि सुनने वाला उस बात का सही आकलन कर सके ।

● आपको उत्साहपूर्ण तरीक़े से अपनी बात को समझाने का प्रयत्न करना चाहिए, न कि किसी प्रकार का दबाव डालकर । इससे बातचीत में सकारात्मक दृष्टिकोण आएगा ।

● बातचीत में लचीलापन भी होना चाहिए, अगर इसकी आवश्यकता महसूस होती हो । आवश्यकता पड़ने पर दसूरों की बात को भी महत्व देकर उससे सहमति जतानी चाहिए ।

● बात को सुचारू रूप से चलाने के लिए छोटी-छोटी बातों पर कठोर रवैया नहीं अपनाना चाहिए और सहमति का भाव रखना चाहिए, साथ ही मूल सिद्धांतों से बहुत परे भी नहीं जाना चाहिए ।

● बातचीत के दौरान अगर किसी विषय पर परस्पर विचार नहीं मिल रहे हैं तो उसे अपनी प्रतिष्ठा का विषय नहीं बनाना चाहिए । उस समय सत्संबंधी चर्चा को टालकर आगे के समय का इन्तिज़ार करना चाहिए । इससे दोनों पक्षों में तनाव उत्पन्न नहीं होगा और मूल विषय पर पुन: आने के लिए विवश होना पड़ेगा ।

● बातचीत के दौरान सामने वाले को या अपने विरोधी को, अगर वह आपके विचारों से सहमति जताने की कोशिश कर रहा है, तो उसे आप सम्मानपूर्वक मौक़ा देकर उसे आने

(शेष पृष्ठ 46 पर)

# मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

## नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

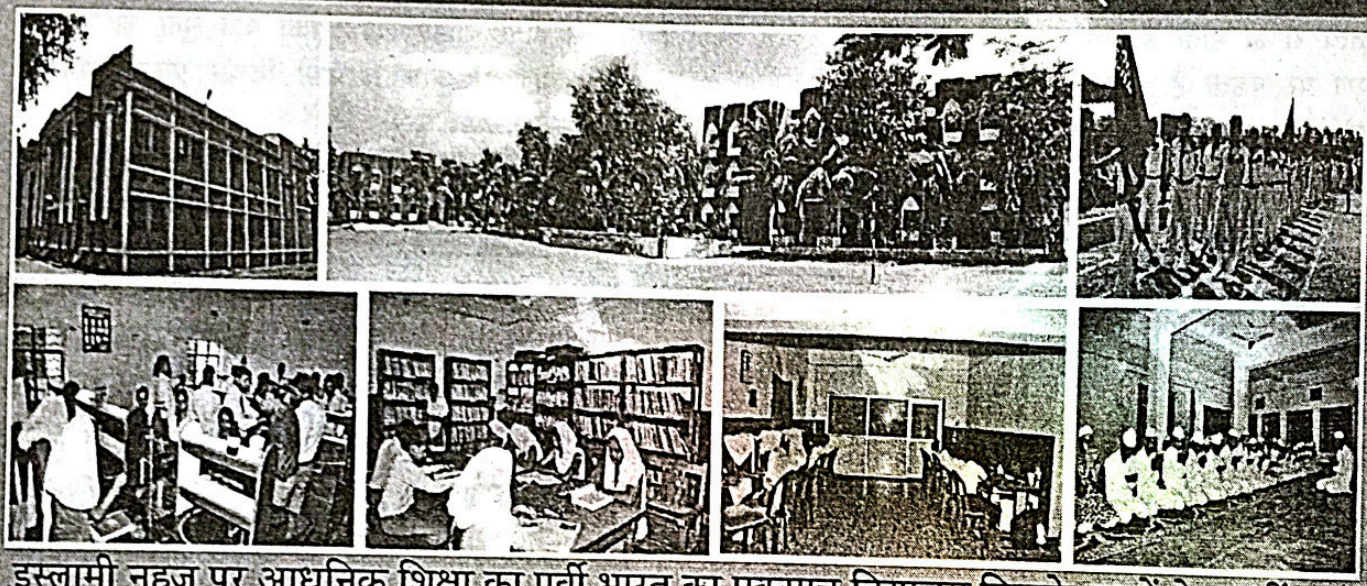

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

## उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

## नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

| एस॰एम॰ नईम | साद राशिद ख़ान नदवी | वकील अहमद |
|---|---|---|
| एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.) | फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ | एम.एस.सी., बी.एड |
| निदेशक | छात्रावास अधिक्षक | प्राचार्य |

## विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

# मक्कार

■ मनजीत शर्मा 'मीरा'
(ग्रेटर मोहाली, पंजाब)

"तुझसे झुककर झाड़ू नहीं लगती...? खड़े-खड़े आगे-आगे ही लगा देती है । पोंछा भी खड़े-खड़े लगा लिया कर । सोफ़े, मेज और पलंग के नीचे हमेशा कचरा छोड़ देती है । महारानी, बर्तन भी इतने गंदे धोती है कि जो भी गिलास कटोरी उठाओ उसी में विम लगा मिलता है । छुट्टियां भी इन्हें चाहिए, पैसे भी पूरे चाहिएं...।"

पचास वर्षीया कामवाली पर पत्नी आज फिर झल्लाई तो कामवाली का भी मुंह खुल गया–"दस घरों में काम करती हूं, बीवी जी । घुटनों में दर्द रहता है । बैठकर झाड़ू लगाती हूं, तो बार-बार उठना मुश्किल हो जाता है । और बर्तन तो मैं ध्यान से ही धोकर रखती हूं । रह गया होगा जल्दी-जल्दी में...आगे से ध्यान रखूंगी ।"

"नहीं, अगर तेरे से काम होता नहीं है, तो करती क्यों है इतने घरों में काम ? उतने ही घर पकड़ जहां सबका काम ढंग से निबटा सके...।" पत्नी बड़बड़ाती हुई रसोई में चली गयी ।

काम वाली ने माथे का पसीना पोंछते हुए अपनी सांसों को दुरुस्त किया और पोछा लगाने लगी । पर पत्नी को आज चैन नहीं था । तमककर रसोई से कॉफ़ी का मग लेकर आ गयी जिसके तले में विम लगा रह गया था–"देख ये... कितना साबुन लगा है नीचे । अभी तो और बर्तन निकालूंगी तो उन पर भी तेरा हुनर दिख जाएगा...।" पत्नी का गुस्सा उस अधेड़ कामवाली पर आज पूरे सबाब पर था ।

"कोइ बात नहीं बीवीजी, आपने नहीं कराना काम तो रहने दें । इतना भी बुरा काम नहीं करती मैं...।" और अपना हिसाब-किताब लेकर कामवाली तो चलती बनी ।

अब घर में कामवाली नहीं है । पत्नी को दफ़्तर जाना होता है, तो वह सुबह सफ़ाई नहीं करती । शाम को थकी हुई लौटती है तो ऐसे ही मोटा-मोटा कचरा सामने से बहार देती है । पोंछा तो लगाती ही नहीं । आफ़िस जाने की जल्दी में उससे भी बर्तनों पर विम लगा रह जाता है और मैं चाहकर भी उसे दिखा नहीं पाता । मैं इस बात को अच्छी तरह समझता हूं कि एक नौकरीपेशा औरत के लिए सब कुछ सुचारू रूप से चलाना कितना मुश्किल कार्य है ।

"इन प्राइवेट कंपनियों को भी सरकार की तरह मेटरनिटी लीव बढ़ा देनी चाहिए । छह माह का बच्चा कितना छोटा होता है । अब छुट्टियां करूंगी तो 'विदाउट पे' ही होंगी । फिर घर कैसे चलेगा ? बॉस भी नकचढ़ा है । मेरी नोटिंग-ड्राफ्टिंग में हमेशा कांट-छांट करता रहता है । जितना भी ठीक लिखो उसे मेरा लिखा कोई लेटर पसन्द ही नहीं आता । अब जब उसने काटपीट करनी ही है तो मैं क्यों अपना दिमाग़ खपाऊं । अपनी सीट अप-टू-डेट रखो तो दूसरों का काम सौंप देता है । कंप्यूटर पर बैठे-बैठे वैसे ही गर्दन अकड़ जाती है । जितना होता है, जैसे होता है, करती हूं ।

दूसरी तरफ़ ये कंपनी के क्लाइंट ! शिकायतें पे शिकायतें करके 'ईमेल' भेजते रहते हैं । मैं भी फिर बिना अटेंड किये 'डिलीट' कर देती हूं । और जो अटेंड करती भी हूं उसमें भी 'टरकोलॉजी' का सिद्धांत अपनाती हूं । न ऑफिस जाने का मन करता है न काम करने का । बीस हज़ार रुपये वेतन के मिलते हैं बस यही मजबूरी है । वरना कोई और कंपनी इतने काम के दस हज़ार से ज़्यादा नहीं देगी ।" अपने ऑफ़िस के प्रति रोष से भरी हुई पत्नी बुड़बुड़ाती जा रही थी ।

मुझे याद है कि जब हमारी पुरानी कामवाली के बच्चा हुआ था तो हमने उसे काम से हटा दिया था । तीन माह बाद जब वह दोबारा आयी थी तो उसे इसलिए काम पर नहीं रखा था कि बच्चा छोटा है और वह छुट्टियां ज़्यादा करेगी । कामवाली के बीमार पड़ने पर भी पत्नी उस पर हमेशा किसी और को घर भेजने का दबाव बनाए रखती थी ।

"आज शाम को एक कामवाली आएगी । बात कर लेना उससे...। गुप्ता जी के यहां काम करती है । कम से

कम घर के काम में तो तुम्हें मदद मिल जाएगी । जैसा भी करेगी, ठीक है...।'' मैंने पत्नी को समझाया ।

''मुझे पसन्द नहीं आता इनका काम...।'' वह फिर तैश में आ गयी ।

कभी किसी औरत को दूसरी औरत का काम पसन्द आया है ? मैंने मन ही मन सोचा पर बोला नहीं ।

''दस-दस घरों में मजबूरीवश काम करती है । शरीर साथ नहीं देता तो मक्कारी करती हैं । और फिर इन्हें तो अपने परिवार से भी सहयोग नहीं मिलता ।'' मैंने शांत रहते हुए पत्नी को फिर समझाया ।

''तुम नहीं जानते, सारी की सारी मक्कार होती हैं ।'' कहकर पत्नी बच्चे को गोद में उठाकर बहलाने लगी । और मैं अंतर्मन के शब्दकोष में 'मक्कार' शब्द के सही मानी तलाशने में जुट गया ।

# आशा बहिन

तेज़ बारिश में रात 8 बजे के आसपास एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर ट्रेन रुकी ही थी कि तृतीय श्रेणी के स्लीपर कोच में चार सिपाहियों के साथ एक सुन्दर, शिक्षित, परेशान से व्यक्ति ने प्रवेश किया । उसने तेज़ आवाज़ में यात्रियों को संबोधित करते हुए पूछा–''सुनिए मैं कलेक्टर सुन्दरनगर हूं । आप में कोई डॉक्टर है क्या ?'' डिब्बे में सफ़र कर रहे यात्रियों में से तीन यात्रियों ने अपने स्थान से उठकर कलेक्टर के सामने जाकर उन्हें अभिवादन किया ।

''आप ?'' कलेक्टर ने सामने खड़े व्यक्ति से पूछा ।

''जी, मैं डॉ० रत्नाकर शर्मा हूं, शृंगार रस में पी०एच०डी० की है ।

''आप ?'' दूसरे व्यक्ति से कलेक्टर ने पूछा ।

''जी, मैं वेटनरी डॉक्टर हूं । भावननगर के शासकीय पशु चिकित्सालय में पदस्थ हूं ।''

''और आप ?'' अंतिम सामने खड़े हुए व्यक्ति से कलेक्टर ने पूछा ।

''जी, मैंने विद्या वाचस्पति की डिग्री प्राप्त की है ।''

कलेक्टर ने निराशा होकर डिब्बे से बाहर जाना ही चाहते थे कि उनके कानों में एक महिला की आवाज़ सुनायी दी । वह कह रही थी–''सर हुआ क्या है ? आप किस तरह का डॉक्टर चाहते हैं ?'' कलेक्टर ने आशा भरी नज़रों से म हिला को देखा और बताया कि–''मैडम, मैं अपनी गर्भवती पत्नी के साथ ए०सी० फर्स्ट क्लास में यात्रा कर रहा हूं । उन्हें छह माह का गर्भ है और वे दर्द से तड़प रही है । मैं किसी स्त्री रोग विशेषज्ञ की तलाश में आया था ।''

सर, यह दो टेबलेट है, जो पेन किलर है, आप अपनी पत्नी को इनमें से एक गोली अभी पानी के साथ दे दीजिए । हां, यदि फिर कोई बात होगी तो मैं सुन्दरनगर तक इसी कोच में सफ़र कर रही हूं । आप मुझे तत्काल बुलवा लीजिए । मैं हाज़िर हो जाऊंगी ।'' महिला ने विनम्रता से कहा गोलियों की पैकेट लेते हुए कलेक्टर ने महिला से पूछा–''मैडम आपका परिचय ?''

सर, मैं भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत गांव में काम करने वाली ''आशा बहिन हूं ।'' कलेक्टर ने उस महिला को धन्यवाद कहा और वे डिब्बे से निकल कर तेज़ी से अपनी कोच की ओर चले गये ।

**प्रभात दुबे**

जबलपुर, म०प्र०

## कविता

# आज़ादी

आज़ादी का क्या मतलब है
लोग अभी तक पूछ रहे हैं
कुछ हाथों में हीरे मोती
कुछ में लोहे झूल रहे हैं

सूत्र बहुत से जगमग जगमग
लोग मगर हैं बुझे-बुझे से
अफ़सरशाही बस चमकीली
बाक़ी सब हैं थके थके से

पांच दशक खोटे सिक्कों से
इन हाथों में पड़े हुए हैं
ख़्वाबों हमारी आंखों में हैं
लेकिन कब से जड़े हुए हैं ?

**अहद प्रकाश**

भोपाल, म०प्र०

# आरक्षण मुसलमानों का हक़ है, और अनुकम्पा भीख

■ विद्या प्रकाश

आगामी वर्ष 2017 में उ०प्र० में संपन्न होने जा रहे विधानसभा चुनाव के के दृष्टिगत तमाम छोटे-बड़े दल जैसे नींद से जाग उठे हैं। अब तक आंख मूंदे रहने वाले सियासी दलों को अब जाकर अल्पसंख्यक समुदाय के मुसलमानों की सुधि आने लगी है और उनको थोक वोट बैंक के रूप में भुनाने के मक़सद से अपनी-अपनी डफली पर अपना-अपना रागालापन कर डोरे डालने की दलगत शुरुआत हो गयी है।

कोई मुसलमानों के आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन का ठीकरा विरोधी पार्टियों के सिर पर फोड़कर इस संबंध में अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ ले रहा है, कोई उनकी तमाम तरह की आर्थिक अनार्थिक समस्याओं के सत्वर निराकरणार्थ आश्वासनों का लालीपाप दिखा, घोषणाओं का लेमनजूस चटा रहा है। देश के स्वातंत्र्योपरांत पिछले 68 सालों का इतिहास गवाह है। प्रत्येक लोकसभा तथा प्रांतीय विधानसभाओं के चुनावों में राजनीतिक स्तर पर मुसलमानों के सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक उत्थान और पिछड़ेपन तथा बेरोज़गारी जैसी समस्याओं के निराकरण के संबंध में ख़ूब लंबे-चौड़े वादे सार्वजनिक रूप से पब्लिक प्लेटफार्म पर किये जाते हैं और चुनावी एजेंडा में मुसलमानों के हितोत्थान को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जाती है।

हुकूमत में आने के बाद यदि कोई दल मुसलमानों के हित में किसी प्रकार की योजना बनाता भी है तो उस पर ईमानदारी और नेकनीयती से अमल नहीं किया जाता और वह भ्रष्टाचार तथा लापरवाही का शिकार होकर रह जाती है। राजनीतिक दलों द्वारा मुसलमानों के हित, कल्याण और विकास को लेकर आज़ादी के पिछले 68 सालों से चूहे-बिल्ली का खेल खेला जा रहा है तथा इस स्थिति पर यू०पी० के पूर्वांचल में प्रचलित गांव भर में हल्ला होइ ग हाथी आएस आएस, हाथी पादेस पों से' वाली उक्ति सोलहों आने चरितार्थ हो रही है। राजनीतिक दल मुसलमानों के विकास को गंभीरता से नहीं लेते तथा इस मामले में उनकी नीयत हरगिज ईमानदार और दुरुस्त नहीं कही जा सकती। चुनाव काल में थोक वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करने के बाद उनको उसी प्रकार उनके भाग्य और उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है जिस प्रकार संतरा और नींबू का रस गार और निचोड़ लेने के बाद छिलके को कूड़ादान में डाल दिया जाता है।

आज केन्द्र और प्रदेश स्तर की सरकारी नौकरियों में मुसलमानों का प्रतिशत पहले से काफ़ी घट गया है तथा संसद और विधान मंडलों में मुस्लिम जन प्रतिनिधियों की संख्या नगण्य है। जब सरकारी नौकरियों में आबादी के लिहाज़ से मुसलमानों के आरक्षण तथा मुस्लिम बहुल निर्वाचन क्षेत्रों में उनके लिए पृथक व्यवस्था की बात की जाती है तो अनेक लोग यह कहते हुए घोड़े की तरह हिनहिनाने लगते हैं कि इससे साम्प्रदायिक अलगाववाद का ख़तरा बढ़ेगा।

सवाल है जब सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति तथा अनुसूचित जनजाति के अभ्यार्थियों के पृथक आरक्षण तथा उनके लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था से देश में अलगाव का ख़तरा नहीं है तो फिर मुसलमानों के लिए इस प्रकार की विशिष्ट व्यवस्था से देश की सार्वभौमिकता, सम्प्रभुता, अखंडता और साम्प्रदायिक सामाजिक समरसता को कैसे ख़तरा उत्पन्न हो जाएगा ?

यह तो मुसलमानों को उनके संवैधानिक हक़ से वंचित करने का एक ख़ूबसूरत बहाना है। यू०पी० में मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में चल रही सपा सरकार ने मुसलमानों को प्रांतीय नौकरियों में आरक्षण देने व सच्चर कमेटी की संस्तुतियों को लागू करने का आश्वासन दिया था जो कोरा आश्वासन साबित हुआ। मुसलमानों के हित साधन में केन्द्र सरकार पर रुकावट पैदा करने तथा असहयोगात्मक रुख़ इख़्तियार करने के आरोप बराबर लगाये जाते रहे मगर सपा सरकार अपने कार्यकाल में अपने रियासती दायरे में जितना कर सकती थी और जितना मुमकिन था, उसने उतना भी नहीं किया। आज भी प्रदेश में जनपदवार अल्पसंख्यक

अधिकारी पद पर ज़्यादातर ग़ैर-मुस्लिम तैनात हैं ।

सरकारी योजनाओं तथा घोषणाओं के बावजूद सूबे में न मुसलमानों के क़ब्रिस्तानों पर सुरक्षात्मक दृष्टि से चहारदीवारी की तामीर करायी गयी और न मदरसों का सही प्रकार से आधुनिकीकरण कराया गया । किसी मदरसे में कंप्यूटर है तो कंप्यूटर प्रशिक्षक नहीं, कहीं कंप्यूटर प्रशिक्षक तैनात हैं तो कंप्यूटर नहीं । मदरसे के ज़िम्मेदारों द्वारा इससे संबंधित तमाम लिखी-पढ़ी के बावजूद नतीजा सिफ़र हासिल हो रहा है ।

आज मुसलमानों के समक्ष नौकरियों में आरक्षण पृथक निर्वाचन क्षेत्र के गठन, फ़ौज में उनके लिए पृथक रेजीमेंट के निर्माण, बेरोज़गारी वग़ैरह अनेकानेक समस्याएं हैं । हमें यह संजीदगी से ग़ौर करना होगा कि क्या वजह है कि आज़ादी के बाद आज तक केन्द्र में प्रधानमंत्री पद पर एक भी मुसलमान नहीं बना और देश के अन्य प्रांतों में जम्मू कश्मीर व कुछेक मामलों को अपवाद स्वरूप छोड़कर मुसलमान मुख्यमंत्री क्यों नहीं बना । मुसलमानों को ख़ुश करने के लिए राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, उपराज्यपाल, विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा आयोगों के अध्यक्ष जैसे कठपुतली पदों पर मुसलमानों को अलबत्ता तैनात कर दिया जाता रहा है । क्या यह मुसलमानों के साथ ज़्यादती तथा नाइन्साफ़ी नहीं ? आज आवश्यकता इस बात की है कि मुसलमान अपने विकास तथा अपनी समस्याओं के समाधान हेतु राजनीतिक दलों के पिछलग्गू कदापि न बनें और न उनके झांसे में आएं । वे संगठित तथा जागरूक हों तथा ख़ुद अपने भीतर कारगर क़यादतकारी की सलाहियत व क़ूवत पैदा करें ।

यदि किसी पार्टी का सरपरस्त मुखिया अथवा मुख्यमंत्री उनके हक़ में किये गये वादों, आश्वासनों तथा घोषणाओं पर सही ढंग से अमल नहीं करता है, वादाख़िलाफ़ी तथा बेईमानी करता है तो, उसका बहिष्कार किया जाए । मुसलमान कब तक दलों के आगे हक़ों इन्साफ़ के लिए गिड़गिड़ाते रहेंगे ? वे यह क्यों भूल जाते हैं कि नौकरियों में आरक्षण उनका हक़ है, भीख, ख़ैरात तथा मेहरबानी नहीं ? एक ही देश में दलितों, पिछड़ों को आरक्षण का लाभ मिले, अल्पसंख्यकत्व के आधार पर मुसलमानों को इससे वंचित किया गया, क्या यह भेदभावपूर्ण पीति उचित और न्यायसंगत है. ?

# कैसे करें सकारात्मक व्यक्तित्व...

(पृष्ठ 41 का शेष)

विचारों को वापस लेने का मौक़ा दीजिए ताकि उसके अहम पर चोट न लगे । अगर आपने उसके विचारों को नकार दिया तो यह बहुत हानिकारक हो सकता है, उसके अहम को चोट लग सकती है, जिससे आगे के लिए बातचीत का माहौल ख़राब हो सकता है ।

● आपकी छवि ऐसी होनी चाहिए कि वादों को विनीत भाव में बदल दे, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो । विनीत भाव अच्छे चरित्र से निकलता है और वह व्यक्ति के विश्वास में बदल जाता है । बिना विनीत भाव के संबंध छिछले व हल्के-फुल्के हैं ।

● बातचीत के दौरान कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए बल्कि नरम शब्दों से विषय को दृढ़ता से रखना चाहिए । जोर से बोलकर या चिल्लाकर विषय को कमज़ोर न करें, इससे विषय का वज़न बिल्कुल समाप्त हो जाएगा ।

● बातचीत के दौरान निम्नांकित तरह के वाक्यों को काम में लेने से वातावरण सौहार्दपूर्ण बन सकता है, जैसे 'मुझे ऐसा लगता है', 'शायद मैं ग़लत होऊं', 'अगर आप इसको इस तरह से सोचें तो...', 'आप इस विषय पर और ज़्यादा प्रकाश डालें तो अच्छा रहेगा' इत्यादि ।

● भरोसे बनिए और वफ़ादारी से काम कीजिए । एक पुरानी कहावत भी है कि 'एक औंस वफ़ादारी कई पौंड चालाकी से बेहतर है ।' क़ाबिलियत महत्वपूर्ण है, परन्तु भरोसेमंद होना बहुत आवश्यक है ।

● भूलने और माफ़ करने की आदत बनानी चाहिए तथा किसी से बदला लेने की भावना का त्याग करना चाहिए ।

अगर इन्सान किसी को माफ़ करने से मरना करता है तो वह बातचीत के लिए दरवाज़े बंद कर रहा है, जिसे उसे किसी दिन खोलने की आवश्यकता भी पड़ सकती है । बदला लेने की भावना रखना या दूसरों के प्रति विरोधी भावना रखकर बातचीत करने से हम अपना ही नुक़सान कर रहे हैं । ज़िन्दगी का समय छोटा है, इस छोटे से समय को बदला लेने में गुज़ारना लाभदायक नहीं है । इसे सदा ध्यान में रखिए, नहीं तो सारा जीवन ही तनावपूर्ण हो जाएगा ।

व्यंग्य

# सम्मान लौटाने की सोच रहा हूं

■ डॉ॰ राकेश कुमार सिंह
(आगरा, उ॰प्र॰)

लोग चलते-फिरते व्यंग्य लिख लेते हैं तो सोचता हूं कि ऐसे लोगों में निश्चित ही परसाई या जोशी के व्यंग्य जींस आ गये हैं। भले ही वे उड़ कर ही क्यों न आये हों। मुझे भी व्यंग्य लेखक कहा जाता है। इसके लिए मुझे सम्मान भी दिया गया है लेकिन इस सम्मान की सुरक्षा अब मुझ से हो नहीं पा रही है। अब मुझसे लेटे-लेटे या बैठे-बैठे एक व्यंग्य तो दूर, व्यंग्य का एक जुमला भी लिखा नहीं जाता। सोचता रहता हूं कि लिखं तो किस पर लिखूं। लगता है कि इस सम्मान के अलावा मुझ में अब कुछ बचा भी तो नहीं है।

आज मुझ जैसे व्यंग्यकार के सामने विकट संकट है। देश में अच्छे दिन क्या आ गये, व्यंग्यकार की हालत ख़राब हो गयी। उसके बुरे दिन शुरू हो गये। सब कुछ चंगा ही चंगा तो फिर अब वह किस पर कटाक्ष करे। आज शेर-बकरी घाट पर साथ-साथ पानी पी रहे हैं। बाल भले ही सफ़ेद हो गये हैं, पर दिल से सभी लोग जवान हैं। अट्ठारह-अट्ठारह घंटे काम करते हैं, पर मजाल है कि कभी पानी मांगें। मजाल है कि उनका दिल कभी मचले। हां, ज़बान कभी फिसले तो फिसल जाए। सावन के अंधे की तरह सबको हरा ही हरा दिखता है–"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज काहू नहिं व्यापा।" प्राचीनकाल के थोड़े से बूढ़े बचे हैं, तो कई व्यंग्यकार इसमें क्या करे! इनके त्याग और इनकी तपस्या ने इनको इतना महान बना दिया है कि ये सब किसी काम के नहीं रह गये हैं।

कुछ भी लिख-पढ़ न पाने की स्थिति में आत्म मंथन कर रहा हूं कि व्यंग्य लेखन के लिए मिला अपना सम्मान लौटा दूं। सम्मान लौटाने की हवा चल रही है। मैं भी क्यों न। बहती गंगा में हाथ धो लूं। एक बार फिर मेरा नाम अख़बार की सुर्ख़ियों में आ जाए। व्यंग्य लेखकों को भी लिखने के लिए एक मुद्दा मिल जाएगा। उनकी कुछ तो बेकारी कम होगी। कहते हैं न, परहित सरिस धर्म नहिं भाई। फिर, नैतिक दृष्टि से भी बेजा नहीं है। आज मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है। वह स्वीकार रही है कि वास्तव में मैं इस सम्मान के लायक़ ही न था। निश्चित ही मैंने किसी डिजर्विंग कैंडीडेट का हक़ मार कर उसे हल्का किया है। मेरी आत्मा यह भी कहती है–काम तो यह भी परोपकार का ही था। सच्ची बात तो यह है कि परोपकार की प्रवृत्ति मुझ से कभी छूटती ही नहीं। तू मुझे दे, मैं तुझे दूंगा की तर्ज़ पर मुझे यह सम्मान मिला था तो कुछ ग़लत भी नहीं था। लेकिन अब इसे लौटा कर देर आये दुरुस्त आये का आदर्श प्रस्तुत करने से क्यों चूकूं! अच्छा लगेगा न, हां अच्छा लगेगा।

सम्मान लौटाने की बात सोच रहा हूं लेकिन यह कार्य सबके साथ करता तो ज़्यादा ही अच्छा रहता। दरअस्ल, भेड़ चाल का आनन्द ही अलग है। वैसे सम्मान लौटाने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। सोच रहा हूं कि कहीं ऐसा न हो कि सम्मान न लौटाने वालों में, मैं ही अकेला रह जाऊं, अलग-थलग पड़ जाऊं, और विरोधी ख़ेमा मुझे पक्ष में मानकर मुझे पुनः सम्मानित करने की सोचने लगे। मैं तो दोनों तरफ़ की देखता हूं। इसलिए अब तक अन्य लोगों को 'शहीद' होते देखता रहा। एक बात दिमाग़ में और आती है कि अगर सम्मान लौटाऊ तो सम्मान लौटाने का कारण भी मौलिक न हो तो सम्मान लौटाने में कोई मज़ा नहीं है।

अपने 'सम्मान' लौटाने के दो कारण मुझे जंच रहे हैं। एक तो यह कि कई बार आग्रह करने के बावजूद घर पर दूध लाने वाला ग्वाला अपनी हरकत से बाज़ नहीं आता। पानी में दूध मिलाये बिना नहीं रहता। उसके हृदय परिवर्तन के लिए इससे बड़ा अब और कोई उपाय मुझे नहीं सूझता। दूसरे ठीक है, मैंने कई सालों से मकान मालिक को उसका किराया नहीं दिया है। लेकिन बार-बार किराया मांग कर मकान मालिक को मेरे सम्मान का अपमान करने का कोई हक़ नहीं है, लेकिन पुलिस उसके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई ही नहीं करती तो अपने इस सम्मान की रक्षा के लिए उसे लौटा देने के अतिरिक्त मेरे पास कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है। यह दूसरा कारण मुझे कुछ ज़्यादा ही ज़ोरदार लगता है।

# टी-20 विश्व कप से संबंधित ख़ास बातें

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

क्रिकेट में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फ़िलहाल तीन प्रकार की क्रिकेट खेली जाती है। टेस्ट क्रिकेट, एकदिवसीय क्रिकेट और टी-20 क्रिकेट। वैसे तो यह कहा जाता है कि अस्ली क्रिकेट टेस्ट क्रिकेट ही है और उसी में खिलाड़ियों के अस्ली कौशल की पहचान होती है, मगर जल्द नतीजा निकल जाने की वजह से अब अधिकतर लोग टी-20 क्रिकेट को पसंद करते हैं। टी-20 क्रिकेट की लोकप्रियता का आलम यह है कि एक ओर जहां भारत में आई॰पी॰एल॰ जैसे टूर्नामेंट होते हैं जिसमें खेलने की तमन्ना हर देश के खिलाड़ियों की होती है वहीं दुनिया के दूसरे देशों में भी अब 20-20 ओवर के टूर्नामेंट होने लगे हैं। हालांकि क्रिकेट में अपनी एक ख़ास पहुंच रखने वाले भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने शुरू में 20-20 ओवर के मैचों का विरोध किया था, मगर दर्शकों में इसकी लोकप्रियता के बाद भारत भी इसके पक्ष में आ गया। कमाल तो उस वक़्त हो गया जब जिस भारत ने ऐसी क्रिकेट का विरोध किया था उसी ने टी-20 का पहला विश्व कप जीता।

अब तक टी-20 के पांच विश्व कप हो चुके हैं। इस बार छठा विश्व कप भारत में होना है। चूंकि क्रिकेट रिकार्डों का खेल है और विश्व कप चूंकि एक बड़ा आयोजन है इसलिए ऐसे अवसर पर यह ज़रूरी है कि हमें वह सब ख़ास रिकार्ड पता रहे जिनका संबंध टी-20 विश्व कप से है। पहला विश्व कप भारत ने, दूसरा पाकिस्तान ने, तीसरा इंग्लैंड ने, चौथा वेस्टइंडीज़ ने और पांचवां श्रीलंका ने जीता।

टी-20 विश्व कप में सबसे अधिक 31 मैच खेलने और सबसे अधिक 21 मैच जीतने का रिकार्ड श्रीलंका के नाम है। जहां तक भारत का सवाल है तो भारत ने टी-20 विश्व कप में कुल 28 मैच खेले हैं जिनमें से उसे 18 में जीत मिली है 9 मैचों में हार का सामना करना पड़ा है जबकि एक मैच ऐसा हुआ जिसका नतीजा नहीं निकला। सबसे अधिक हार की बात करें तो इस मामले का रिकार्ड बंगलादेश के नाम है। बंगलादेश ने टी-20 विश्व कप में 18 मैच खेले हैं जिनमें से उसे सिर्फ़ 3 में जीत मिली है और 15 में हार नसीब हुई है। स्कॉटलैंड और केन्या दो ऐसी टीमें हैं जो टी-20 विश्व कप में एक मैच भी नहीं जीत सकी।

14 सितम्बर 2007 को जोहांसबर्ग में श्रीलंका ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 260 रन बनाए थे यह टी-20 विश्व कप में किसी भी टीम का एक पारी में सबसे बड़ा स्कोर है। इस मामले में भारत दूसरे नंबर पर है। 19 सितम्बर 2007 को भारत ने डरबन में इंग्लैंड के ख़िलाफ़ 218 रन बनाए थे। यह भारत का टी-20 विश्व कप में सबसे बड़ा स्कोर और किसी भी टीम का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है।

24 मार्च 2014 को चिटगांग में श्रीलंका के ख़िलाफ़ हॉलैंड की पूरी टीम सिर्फ़ 39 रन के मामूली स्कोर पर आउट हो गयी। टी-20 विश्व कप में किसी भी टीम का एक पारी में न्यूनतम स्कोर है। 14 सितम्बर 2007 को श्रीलंका ने केन्या को 172 रनों से हराया था। यह टी-20 विश्व कप में किसी भी टीम की रनों के अंतर से सबसे बड़ी जीत है। वैसे अब तक तीन बार ऐसा हो चूका है जब यहां किसी टीम ने 100 या उससे अधिक रनों के अंतर से जीत प्राप्त की। विकेट के हिसाब से सबसे बड़ी जीत के तौर पर ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ़्रीक़ा दोनों ने एक-एक बार दस-दस विकेट से जीत हासिल की है। ऑस्ट्रेलिया ने 20 सितम्बर 2007 को श्रीलंका को, जबकि दक्षिण अफ़्रीक़ा ने 20 सितम्बर 2012 को ज़िम्बाब्वे को इतने बड़े अंतर से हराया।

टी-20 विश्व कप में अब तक तीन बार ऐसा हो चूका है जब किसी टीम को मात्र एक रन से जीत मिली। 9 जून 2009 को दक्षिण अफ़्रीक़ा ने न्यूज़ीलैंड को, 8 मई 2010 को न्यूज़लैंड ने पाकिस्तान को और 2 अक्तूबर 2012 को भारत ने दक्षिण अफ़्रीक़ा को एक रन से हराया। विकटों के हिसाब से सबसे छोटी जीत की बात करें तो अब तक तीन

बार ऐसा हुआ है जब किसी टीम को 2 विकेट से जीत मिली ।

21 सितम्बर 2012 को न्यूज़ीलैंड ने ब्रेंडन मैकुलम ने बंगलादेश के ख़िलाफ़ 123 रन बनाए थे । यह टी-20 विश्व कप में किसी भी बल्लेबाज़ का सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर है । वैसे अब तक कुल मिलाकर टी-20 विश्व कप में 6 शतक लगाए जा चुके हैं । मैकुलम के अलावा इन खिलाड़ियों ने शतक लगाए हैं उनमें क्रिस गेल, अलेक्स हेल्स, अहमद शहज़ाद, सुरेश रैना और महेला जयवर्दने शामिल हैं । इंग्लैंड के लियुक् राइट एक ऐसे खिलाड़ी हैं जो टी-20 विश्व कप के एक मैच में 99 रन पर अविजित रह गये और अपना शतक पूरा नहीं कर सके ।

टी-20 विश्व कप में कुल मिलाकर सबसे अधिक रन बनाने का रिकार्ड श्रीलंका के महिला जयवर्दने के नाम है । उन्होंने एक शतक और 5 अर्धशतक की मदद से 31 मैचों में 1016 रन बनाए । भारत की ओर से यह रिकार्ड रोहित शर्मा के नाम है । रोहित ने 23 मैच में 585 रन बनाए हैं ।

क्रिकेट में और ख़ास तौर पर टी-20 क्रिकेट में छक्का लगाने की बात हो तो इस मामले में सबसे पहले ज़बान पर क्रिस गेल का ही नाम आता है । टी 20 विश्व कप में इस सिलसिले का रिकार्ड भी क्रिस गेल के ही नाम है । गेल ने 23 मैचों में 49 छक्के लगाए हैं । दूसरे नम्बर पर भारत के युवराज सिंह हैं जिनके छक्कों की संख्या 31 है । 11 सितम्बर 2007 को क्रिस गेल ने अपनी 117 रनों की पारी के दौरान 10 छक्के और 7 चौके लगाये थे यानी सिर्फ़ छक्के और चौके से 88 रन बने थे यह टी-20 विश्व कप में सिर्फ़ छक्के और चौके से सबसे अधिक रन बनाने का रिकार्ड है ।


## फ़ार्म–4

## नियम–8

प्रकाशन : 'कान्ति', D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

प्रकाशन अवधि : मासिक

प्रकाशक, मुद्रक : मुहम्मद अहमद

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : फ्लैट न॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)

सम्पादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एफ 101, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव-II, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

स्वामित्व : दावत ट्रस्ट (रजि॰) D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज

चेयरमैन : मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सेक्रेट्री : जनाब टी॰ आरिफ़ अली डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सदस्य : 1. जनाब टी॰के॰ अब्दुल्लाह मौलवी, इलाथन कण्डी हाउस, पोस्ट-पालीरी, वाया-कुटियाड़ी, ज़िला कालीकट, केरल, 2. जनाब मुहम्मद जाफ़र, फ्लैट न॰ 102, दारुस्सलाम, ई-89, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 3. प्रो॰ के॰ ए॰ सिद्दीक़ हसन, कदम बोट हाउस, पी॰ओ॰ मेडिकल कॉलेज, कालीकट, केरल-693008, 4. जनाब नुसरत अली, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 5. जनाब एजाज़ अहमद असलम, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 6. जनाब मुज्तबा फ़ारूक़, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 7. जनाब रफ़ीक़ अहमद, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 8. डॉ॰ वक़ार अनवर, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 9. जनाब परवाज़ रहमानी, डी-160/2 फर्स्ट फ्लोर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 10. डॉ॰ सैयद क़ासिम रसूल इलयास, 632/9, ज़ाकिर नगर, नयी दिल्ली-25, इंजी॰ मुहम्मद सलीम, डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 12. जनाब मुहम्मद अहमद, फ्लैट न॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)

मैं मुहम्मद अहमद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं ।

हस्ताक्षर

प्रकाशक, मुद्रक : मुहम्मद अहमद

1 मार्च 2016

# सिर्फ़ मशीन नहीं रोबोट

रोबोटिक टेक्नोलॉजी की दुनिया में कई बड़ी तरक्क़ियां हुई हैं । भावनाओं वाली रोबोट नडीन भी इनमें से एक हैं । रोबोट नडीन एक ह्यूमोनॉयड हैं जिसका अपना चरित्र और व्यवहार है । सिंगापुर नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनीवर्सिटी में विकसित की गयीं नडीन का अपना व्यक्तित्व भी है । नडीन अपनी निर्माता प्रोफ़ेसर नाडिया थैलमैन की कॉपी हैं । थैलमैन कहती हैं, "हां वो मुझ जैसी दिखती है, लेकिन मैंने उसे युवा बनाया है, अपनी बेटी जैसी ।" हाल के सालों में ह्यूमनॉयड रोबोट की दुनिया में अहम प्रगति हुई है । अगर आप नडीन की बेइज़्ज़ती करें तो वो गुस्सा हो जाती है और प्यार से बात करने पर दोस्ताना व्यवहार करती है । नडीन के बारे में थैलमैन कहती हैं, "उसका अपना चरित्र है । हमने उसकी भावनाओं पर बहुत काम किया है ताकि वो प्राकृतिक दिख सके ।"

थैलमैन कहती हैं, "नडीन भावनाओं को समझती है । ऐसे रोबोट का इस्तेमाल ऑटिज़्म पीड़ितों के साथ किया जा सकता है क्योंकि ऑटिज़्म प्रभावित बच्चे ज़्यादा हाव-भाव देखना पसंद नहीं करते हैं । ऐसे में नडीन जैसे रोबोट जो अपनी भावनाएं नियंत्रित कर सके हैं ऐसे बच्चों के साथ कारगर सिद्ध हो सकते हैं ।" वो बातचीत की भावना को भी समझती हैं । थैलमैन कहती हैं, "नडीन रोबोट रिसेप्शनिस्ट की दिशा में अगला क़दम हैं । वो ये भूमिका निभा सकती हैं लेकिन मुझे लगता है कि वो इससे भी ज़्यादा कर सकती हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



*With Best Compliment From*

**DR. M. A. PATANKAR**

# Al-Khaleej Diagnostic Centre










M-2, 2nd Floor, Above SBI Bank
South Extension Part-2, New Delhi-110049
Email : alkhaleejdc@yahoo.com
Tel. No. : 011-26262680-41646577

Posted on 20-21 February 2016
March 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.02.2016
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी महिलाओं की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

JANSEVA
Making Money Moral

Linking you to the
Best of both Worlds...

Our dream society
without Interest



Save , Invest and Earn Halal Income ensuring fair distribution of income and wealth in the society.

Janseva Cooperative Credit Society Ltd.
Multistate
Interest Free

DARBHANGA BRANCH:- RASOOLPUR, P.O- MEDICAL COLLEGE DARBHANGA BIHAR 846003
CITY OFFICE:- KARAM GANJ BEHIND ZILA SCHOOL LAHERIA SARAINDARBHANGA
CONTACTS:- 06272295436,9386225579,9097852575
Admin: 7/25-A, 2nd Floor, Grants Building, 17, Arthur Bunder Road, Colaba, Mumbai – 400 005
Regd. Office: AICMEU, Vazir Building, First Floor, 179, I.R. Road, Mumbai – 400 003
Website: www.janseva.in Email: janseva@janseva.in Tel: 022- 22818178
JansevaCCS JansevaCCS